ओ३म्

आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 11 फरवरी 2018 | आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र | सप्ताह रविवार, 11 फरवरी 2018 से 17 फरवरी 2018

फाल्गुन कृ.– 11 ● वि० सं०–2074 ● वर्ष 59, अंक 06, प्रत्येक मंगलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 194 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,117 ● पृ.सं. 1–12 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

डी.ए.वी. कॉलेज फॉर वीमेन फिरोज़पुर छावनी में हुआ वैदिक यज्ञ

डी.ए.वी. कॉलेज फॉर वीमेन फिरोज़पुर छावनी में नववर्ष के शुभारम्भ के उपलक्ष्य में परमपिता परमात्मा से शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक सुखार्थ बृहद् यज्ञ का आयोजन किया गया। इस अवसर पर स्थानीय समिति के उपाध्यक्ष श्रीमान सतीश शर्मा विशेषातिथि के रूप में उपस्थित थे। ईश्वर स्तुति प्रार्थनोपासना, स्वस्ति वाचन, शान्ति प्रकरण के मंत्रों से यज्ञ की कार्यवाही व्याख्या के साथ आचार्य मनमोहन शास्त्री ने की। मुख्य यजमान, प्राध्यापकगण, एवं कर्मचारी वर्ग ने अत्यंत श्रद्धा भक्ति से यज्ञ कुण्ड में आहुतियाँ प्रदान की और नववर्ष के अवसर पर कल्याणकारी, गुण, कर्म और स्वभाव को अपनाने के शुभ संकल्प धारण किए। सभी विभागों के अध्यक्षों, शिक्षकों

और कर्मचारियों ने अपने–अपने विभाग में तन, मन, धन से इस वर्ष में कार्य करने की प्रेरणा ग्रहण की। प्राचार्या डॉ सीमा अरोड़ा ने उपस्थिति को संबोधित करते हुए उन्हें आर्य समाज के संस्थापक एवं महान समाज सुधारक महर्षि दयानन्द सरस्वती और लाहौर में स्थापित प्रथम डी.ए.वी. संस्था में अवैतनिक प्रधानाचार्य के पद पर कार्य करने वाले तपस्वी व त्याग की प्रतिमूर्ति महात्मा हंसराज द्वारा समाज को आर्य (श्रेष्ठ) बनाने हेतु किए गए बलिदान एवं योगदान से परिचित करवाया एवं नववर्ष में बढ़–चढ़ कर काम करने के लिए प्रेरणा देते हुए शुभकामनाएँ दी। श्रीमान सतीश शर्मा ने अपने वक्तव्य में प्राचार्या डॉ सीमा अरोड़ा को अपने कार्यक्षेत्र में सदैव आगे बढ़ने का आशीर्वाद दिया और यज्ञ की वैज्ञानिकता पर प्रकाश डाला तथा उन्होंने कॉलेज को नई बुलन्दियों को छूने की शुभकामनाएँ भी दी। शांतिपाठ के साथ यज्ञ सम्पन्न हुआ।

सोहन लाल डी.ए.वी. अम्बाला शहर में हुआ डॉ. पवन शर्मा का उद्बोधन

सोहन लाल डी.ए.वी. शिक्षा महाविद्यालय, अम्बाला शहर में विस्तार भाषण की लड़ी को डॉ. पवन शर्मा, प्राचार्य, दयानन्द महाविद्यालय, हिसार ने अपने ज्ञान सागर में से कुछ चुनिन्दे मोतियों से सुशोभित किया। उन्होंने छात्रों को जीवन के दर्शन से परिचित कराते हुए बताया कि मनुष्य जीवन ने बहुत लम्बी यात्रा करते हुए इस स्तर को प्राप्त किया है। आज हमें आवश्यकता है दर्शन के स्वरूप को अपने जीवन प्रणाली में उतारने की। हर कार्य व हर व्यक्ति के व्यवहार को क्या, क्यूँ, कैसे के तराजू पर तोल कर परखो। स्वयं को जानो, पहचानो और अपनी शक्तियों से परिचित होकर अपने आप को सिद्ध करो। इसके साथ–साथ उन्होंने शिक्षा को विभिन्न विषयों के साथ जोड़कर उसकी महत्ता समझाते हुए बताया कि जीवन के हर क्षेत्र, में शिक्षा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इस अवसर पर महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. विवेक कोहली ने छात्रों को डॉ. पवन शर्मा के प्रेरणादायक व्यक्तित्व से परिचित कराया। कार्यक्रम के अन्त में डॉ. नरेन्द्र कौशिक ने मुख्यातिथि, प्राचार्य तथा सभी श्रोतागण का धन्यवाद किया। इस अवसर पर महाविद्यालय के सभी प्राध्यापकगण उपस्थित थे।

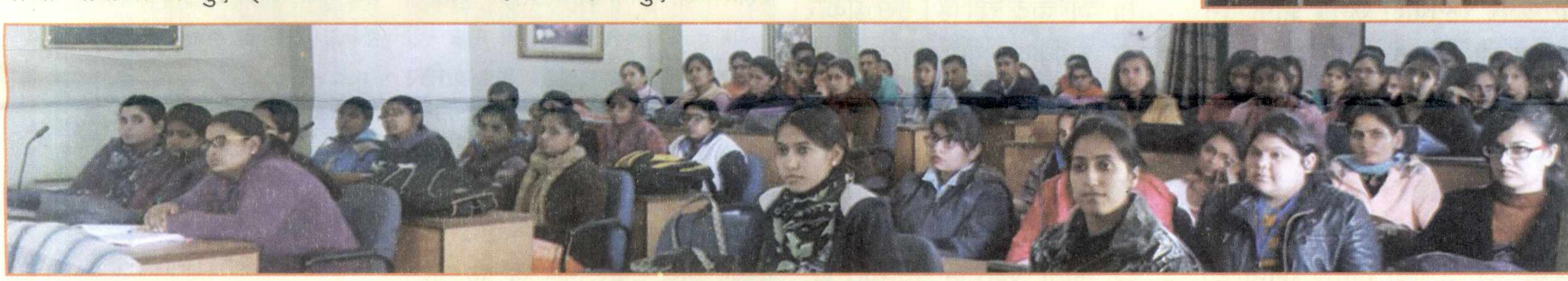

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल पिहोवा में गणतंत्र दिवस पर शहीद की पत्नी द्वारा ध्वजारोहण

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल पिहोवा में 69वे गणतंत्र दिवस के अवसर पर शहीद श्री सुशील कुमार जी की धर्मपत्नी ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया। यहाँ उल्लेखनीय है कि शहीद सुशील कुमार जी के बच्चे इसी स्कूल में शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं तथा स्कूल इन बच्चों से कोई फीस नहीं ले रहा। डी.ए.वी. संस्था यह मानती है कि ऐसे अवसरों पर राष्ट्रीय ध्वज फहराने का असली हक उन्हीं लोगो को है जिन्होंने देश के लिए कुर्बानियाँ दी हैं। इस अवसर पर स्कूल के बच्चों के अलावा दीवाना गांव के ईट के भट्ठो पर काम करने वाले मजदूरों के 48 बच्चो को, जिन्हें स्कूल के शिक्षकों द्वारा शिक्षित किया जा रहा है, उन्हें व् उनके अभिभावकों को भी स्कूल में लाया गया तथा इस कार्यक्रम में शामिल किया गया। कार्यक्रम के बाद इन बच्चों को मिठाइयाँ वितरित की गयी। इस कार्यक्रम में शामिल होकर बच्चे व अभिभावक अति प्रसन्न थे।

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। – स. प्र. समु. १

संपादक – पूनम सूरी

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार, 11 फरवरी 2018 से 17 फरवरी 2018

हम तेरे सम्मुख मूढ़ हैं

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

मूरा अमूर न वयं चिकित्वो, महित्वमग्ने त्वमङ्ग वित्से।
शये वव्रिश्चरति जिह्वयाऽदन्, रेरिह्यते युवतिं विश्पतिः सन्।।

ऋग् १०.४.४

ऋषिः **त्रितः आप्त्यः**। देवता **अग्निः**। छन्दः **त्रिष्टुप्।**

● **(अङ्ग)** हे, **(अमूर)** अमूढ़, **(चिकित्वः)** ज्ञानी, **(अग्ने)** परमेश्वर!, **(मूराः)** मूढ़, **(वयं)** हम, **(महित्वं)** महत्ता को, **(न)** नहीं [जान पाते]।, **(त्वं)** तू, **(वित्से)** जानता है। [हमारा], **(वव्रिः)** रूपवान् आत्मा, **(शये)** सोया पड़ा है, **(जिह्वया)** जिह्वा [आदि इन्द्रियों] से, **(अदन्)** भोग करता हुआ, **(चरति)** विचरता है, **(विश्पतिः सन्)** राजा होता हुआ [भी], **(युवतिं)** प्रकृति–रूप युवति को, **(रेरिह्यते)** अतिशय पुनः–पुनः चाट रहा है।

● हे अग्ने! हे तेजोमय ज्ञानी प्रभु! हम मूढ़ हैं, तुम अमूढ़ हो। हम तो यह भी नहीं जानते कि 'महत्ता' किसका नाम है, महत्त्व प्राप्त करना किसे कहते हैं। हम तो समझते हैं कि सांसारिक दृष्टि से महिमाशाली होना, हाथी, घोड़े, रथ, सेवक आदि का स्वामी हो जाना ही महत्ता है। हमारा तो विचार है कि नचिकेता को यम ने जिस सांसारिक धन–दौलत, पुत्र–पौत्र, भूमि के राज्य आदि सम्पत्ति के प्रलोभन में फँसाना चाहा था, उस सम्पत्ति को पा लेना ही महत्ता है। पर हम मूढ़ अज्ञानियों के ऊपर रहनेवाले अमूढ़ ज्ञानी तुम जानते हो कि सच्ची 'महत्ता' क्या है।

हमारा रूपवान् आत्मा सोया पड़ा है, उसे यही चेतना नहीं है कि मैं किसलिए इस शरीर में आया हूँ, मेरा लक्ष्य क्या है मुझे किधर जाना है। वह जिह्वा आदि इन्द्रियों से निरन्तर भोगों को भोगने में आसक्त हुआ विचर रहा है और इस भोग भोगने में ही अपने जीवन की इतिश्री मान बैठा है। भगवान् ने उसे 'विश्पति' बनाया है, शरीर–नगरी का राजा बनाााया हैं, जिसमें मन, बुद्धि, प्राण, इन्द्रियाँ आदि अनेक प्रजाएँ निवास करती हैं। उसे इस शरीर–नगरी को ईश्वरीय साम्राज्य बनाना चाहिए था, अध्यात्म–साधना द्वारा आध्यात्मिक दृष्टि से उन्नत राष्ट्र बनाना चाहिए था। शरीर–राष्ट्र को भोगों से जर्जर न कर सबल, सप्राण और समनस्क करना चाहिए था। पर धिक्कार है इस आत्मा को! यह तो एक 'युवति' को चाट रहा है, अतिशय पुनः–पुनः चाट रहा है। प्रकृति ही यह युवति है जो नटी बनकर आत्मा को अपने साथ नचा रही है, भोग भुगा रही है। आत्मा प्रकृति को चाट रहा है, प्रकृति आत्मा को चाट रही है। इस प्रकार आत्मा लौकिक भोग–विलासों में आनन्द ले रहा है।

हे मेरे आत्मन्! इस मूढ़ता को त्यागो, अपने अन्दर ज्ञान की ज्योति जगाओ, 'सच्ची महत्ता क्या है' इसे जानो, सोते से उठ खड़े हो, इन्द्रियों के वशीवर्ती न हो, अपितु इन्द्रियों के स्वामी बनो। प्रकृति को न चाटकर परम प्रभु के अमृत–रस का आस्वादन करो। तुम्हारा उद्धार होगा, तुम महिमाशाली बन जाओगे। ❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

बोध कथाएँ

● **महात्मा आनन्द स्वामी**

स्वामी जी ने "जाको राखे साइयाँ" पर कथा सुनाते हुए कहा कि जिस मनुष्य की रक्षा ईश्वर करता है, उसे संसार में कोई नहीं मार सकता। चाहे पूरा संसार उससे दुश्मन क्यों न हो। "तेरी इच्छा पूर्ण हो प्रभो" पर कथा सुनाते हुए कहा प्रभो की इच्छा के बिना संसार में कुछ नहीं हो सकता। इसी में मनुष्य का कल्याण है। "कर्तव्य की पुकार" पर कथा सुनाते हुए कहा मनुष्य को अपना कर्तव्य बिना फल की इच्छा के करना चाहिए, यही कर्तव्य की पुकार है।

–आगे पढ़ेंगे तीन लघु कथाएँ

मुझे मुक्ति नहीं चाहिए

फ़र्रुखाबाद में गंगा के किनारे महर्षि एक झोंपड़ी में रहते थे। एक दिन उनके मित्र स्वामी कैलास आश्रम वहाँ आ गए। स्वामी कैलास आश्रम ने महर्षि के दरवाज़े पर आकर कहा– "दयानन्द! मैं तुमसे एक बात कहने आया हूँ, अन्दर आ जाऊँ?"

महर्षि हँसते हुए बोले– "अवश्य आओ महात्माजी! इस छोटे से झोपड़े में, यदि कैलास पूरा आ सकता है, तो आओ अवश्य।"

कैलास जी अन्दर आकर बोले– "दयानन्द! मैं तुमसे पूछने आया हूँ कि इतना तप करने के पश्चात्, इतना योगसाधन करने के बाद और मोक्ष का अधिकारी बनने के अनन्तर तुम यह किस धंधे में फँस गए हो? क्या सारे संसार की चिन्ता तुम्हें अशान्त किये देती है?"

महर्षि ने इस बात को शान्ति से सुना, फिर गम्भीर आवाज़ में बोले– "सुनो कैलास! जो तुमने कहा, उसे मैं समझता हूँ, परन्तु मैं केवल अपने लिए मोक्ष नहीं चाहता। मैं इस जलते हुए संसार के लिए शान्ति चाहता हूँ। इस संसार में जाकर देखो! यह आँसुओं के सागर में डूबा जाता है, सुलगता है, तड़पता है। मैं इसे छोड़कर जाऊँगा नहीं। मुक्त होऊँगा तो सबको साथ लेकर, नहीं तो यह मुक्ति मुझे चाहिये नहीं।"

खुदा के बन्दे तो हैं हज़ारों, वनों में फिरते हैं मारे–मारे।
मैं उसका बन्दा बनूँगा जिसको खुदा के बन्दों से प्यार होगा।।

जो सच्चे हृदय से जनार्दन को प्यार करता है, वह उस जनता को प्यार क्यों न करे, जो जनार्दन की कृति है? महर्षि दयानन्द के विश्व–प्रेम का आधार यही विश्वरूप प्रेम था।

कर्म कर, फल की कामना नहीं!

महात्मा हंसराज जी की एक बात याद आती है मुझे। अपना जीवन उन्होंने दान दे दिया। बड़े भाई पचास रुपये मासिक देते थे, इस पर निर्वाह करते थे वे। एक बार भाई अप्रसन्न हो गए। सहायता के रुपये देना बन्द कर दिया उन्होंने। महात्माजी के पास कोई पूँजी तो थी ही नहीं। घर में कुछ भी नहीं था। केवल छः आने थे उनके पास। घर में खाने को कुछ भी नहीं था। तीन दिन इस प्रकार बीत गए। पत्रों में उन दिनों महात्माओं के विरुद्ध लेख छप रहे थे। घबराकर उन्होंने सोचा– 'मैं यह कौन–से मार्ग पर चल रहा हूँ?' इस विचार के उत्पन्न होते ही वे घबराहट के साथ अपने छोटे–से कमरे में चलने लगे– इधर–से–उधर, उधर से इधर। चैन नहीं। मछली जैसे पानी के बिना तड़पती है, ऐसे उनका दिल तड़प रहा था। तभी वे अपने कमरे में रखी उस अलमारी के पास पहुँच गए, जिसमें पुस्तकें रखी थी। एक पुस्तक को उन्होंने निकाला। उसका एक पृष्ठ खोला, वहाँ लिखा था–

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
(गीता 2/47)

महात्मा जी ने मुझे बताया कि इन शब्दों को पढ़ते ही उनकी घबराहट दूर हो गई। ऐसा ज्ञान हुआ, जैसे सच्चा और सीधा रास्ता मिल गया है। ऐसा अनुभव हुआ जैसे कोई सामने खड़ा हुआ कहता है– 'अरे घबरा क्यों गया? तेरा काम केवल कर्म करना है, उसके फल की चिन्ता करना नहीं। फल को भगवान् पर छोड़ दो, आगे बढ़ो!'

उन्होंने बताया कि फिर कभी डगमगाना नहीं पड़ा। फिर कभी बेचैनी नहीं आई। यह है स्वाध्याय का फल!

शेष पृष्ठ 05 पर ☞

भारतीय पर्व और शिवरात्रि

● भद्रसेन

भारत एक प्राचीन और विशाल देश है। भारतीय मनीषियों ने भारतीयता के संरक्षण, संवर्धन, प्रोत्साहन के लिए पर्वों की परम्परा को प्रतिष्ठित किया। पर्व शब्द पृ और प्री धातु से निरुक्तकार ने साधा है, जिससे पूरण= संगठन और तृप्ति= प्रसन्नता अर्थ सामने आते हैं। अतः पर्वों पर उनके मनाने वालों के मेल, संगठन की भावना स्पष्ट रूप से सामने आती है। पर्व की संगठन, मेल अर्थ पर्वत [पर्व= मेल, त= वाला] शब्द में आज भी अभिहित होता है, पर्व शब्द का तद्भव पोरा [अंगुलियों, गन्ने की] गाँठ अर्थ में प्रचलित है। पर्व शब्द का प्रथम प्रयोग अमावस्या पूर्णिमा के लिए आया है, जिस के दोनों ओर पन्द्रह–पन्द्रह दिन का मेल है। अतएव पन्द्रह दिन के लिए पक्ष, पर्व शब्द चलता है। प्रत्येक पर्व पर प्रसन्नता, उल्लास, उत्साह, खुशियाँ सर्वत्र दृष्टिगोचर होती हैं, जो प्री (तृप्तो) से भी पर्व की सिद्धि को सूचित करती हैं।

भारतीय पर्वों का प्रारम्भ ऋतुपर्वों से हुआ है, अतः विजयदशमी, दीपमाला, लोहड़ी, मकर–संक्रान्ति, पोंगल, बीहू, बसन्त, वैसाखी, तीज आदि अनेक पर्व ऐसे हैं। हमारे शरीर के भौतिक होने से वह ऋतुओं से प्रभावित है, अतः बदलती ऋतु के साथ दिनचर्या के खान–पान, रहन–सहन, वस्त्रधारण के नियमों में परिवर्तन लाने का सन्देश देना ही ऋतुपर्वों का मुख्य मन्तव्य है अर्थात परिवर्तित ऋतु के अनुकूल दिनचर्या को परिवर्तित करना एक समझदारी है।

ऋतुपर्वों के साथ कुछ पर्व धार्मिक दृष्टि से, तो कुछ पर्व ऐतिहासिक रूप से महापुरुषों के प्रति कृतज्ञता की भावना से आयोजित होते हैं। आज धर्म शब्द पूजा के अर्थ से अधिक जुड़ गया है तथा अपने महापुरुषों के प्रति श्रद्धा की अभिव्यक्ति पूजा की एक प्रक्रिया ही है। अतः आज ये दोनों पर्व एक रूप को धारण कर गए हैं। जैसे कि शिवरात्रि, दुर्गापूजा, गणपतिपूजन, रामनवमी, कृष्णजन्माष्टमी, बुद्धजयन्ती, गुरु नानक जन्मदिवस आदि।

शिवरात्रि, दुर्गापूजा, गणपतिपूजन का आज का प्रचलित रूप यह सिद्ध करता है, कि इन पर्वों, आयोजनों को मनाने वाले अनेक देवी–देवताओं को इष्टदेव के रूप में स्वीकार करते हैं। आज जिस प्रकार से इन की स्तुति, अर्चना की जाती है, उससे तो यही सिद्ध होता है, कि इन–इन की अपनी–अपनी स्वतन्त्र सत्ता है और यह–यह ही इस जग का कर्ता–धर्ता–संहर्ता है। वह–वह देवता किसी की शक्ति, अंश नहीं है। ऐसी भावना को प्रकट करते हुए भक्तगण के साथ यह भी मानते हैं, कि 'दुनिया बनाना, बनाकर चलाना, बस उसी का काम है।' तब एक सोचने वाले के लिए एक समस्या खड़ी हो जाती है, कि जब जगत् की व्यवस्था एक रूप में है, तो उस का व्यवस्थापक भी एक ही होना चाहिए। इतने सारे ईश्वरों के साथ इसका ताल–मेल कैसे होगा?

1838 में जब पहली बार मूलशंकर ने शिवरात्रि का व्रत रखा और रात को जो शिवमन्दिर में देखा, उसका सुनी हुई कथा के साथ तालमेल नहीं लगा। इसकी जाँच के लिए पिताजी को जगाकर पूछा, पर पिता जी कोई सन्तोषजनक उत्तर न दे सके, केवल यह कहकर अपना पिण्ड छुड़वा लिया, कि असली शिव तो कैलाश में रहते हैं।

शिवकथा की चर्चा और व्यवहार में तालमेल, सत्य है या नहीं? इस वास्तविकता की खोज में मूल से शुद्ध चैतन्य ब्रह्मचारी और फिर दयानन्द संन्यासी बनकर 1846 से 1860 तक का समय लगाया। अन्त में 1861 से 63 तक ब्रह्मर्षि गुरु विरजानन्द दण्डी जी ने आर्षज्ञान रूपी एक कुञ्जी हाथ में दी। उसके माध्यम से महर्षिदयानन्द ने वेद और वैदिक वाङ्मय का आलोडन किया। लगातार चले आलोडन से महर्षि ने अपने भाषणों और सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका जैसे ग्रन्थों द्वारा इस को स्पष्ट किया। उस शिवरात्रि से उभरी जिज्ञासा के समाधान का महर्षि को जो बोध प्राप्त हुआ। वह ही शिव [रात्रि] का मर्म है।

शिव का मर्म– इस सारे संसार की रचना, व्यवस्था यह अनुभव कराती है, कि इस का कर्ता–धर्ता एक ही तत्त्व है। वेद आदि शास्त्रों के सैकडों वचनों में इस तत्त्व को बार–बार एक ही कहा गया है। यह सृष्टि विसृष्टि है [इयं विसृष्टि र्यत आबभूव ऋग् 10,129,7] अतः एक अनोखी और अनन्त है। अतएव इस विविधता के नाना रूपों के कारण इसके रचनाकार के ईश्वर, ब्रह्म, शिव, गणपति, दुर्गा, आदि अनेक नाम हैं। जो कि इस परम तत्त्व के गुणों, कर्मों, स्वभावों की अनन्तता के कारण नाना हैं, क्योंकि धातु–प्रलय की यौगिक तावशात् शब्द सीमित अर्थ ही अभिव्यक्त कर सकता है।

जैसे कि शिवशब्द शिवु (कल्याणे) धातु से सिद्ध होने से कल्याण, सुख का वाचक है। तभी तो शिव के शंकर, शम्भु, मयोभू, मयस्कर, मृद आदि पर्यायवाची कल्याण, सुख अर्थ को ही बताते हैं। पर यहाँ शिव–रात्रि के साथ संयुक्त होकर प्रयुक्त हुआ है। रात्रि शब्द प्रलय के अर्थ में भी है, जैसे कि मनुस्मृति [1,72–3] में [ब्राह्म] रात्रि प्रलय का वाचक है। इसी अर्थ के प्रभाव के कारण ब्रह्मा–विष्णु–महेश [शिव] की त्रिमूर्ति, त्रिदेव मानने वालों ने शिव, महेश का कार्य सृष्टि का संहार ही स्वीकार किया है और तभी तो आजकल श्मशान भूमि को शिवपुरी कहा जाता है। शिव के गण संहारक चित्रित हुए हैं। इससे यह अभिप्राय सामने आता है, कि ईश्वर का जो संहार= विनाश कर्म है, इस कर्म के कारण ईश्वर का शिव रूढ़ नाम है। इस क्रूर, भयानक कर्म के कारण शिव को रुद्र भी कहा जाता है। यजुर्वेदी रुद्राध्याय में ऐसे रूप का भी वर्णन है। हाँ, ईश्वर के निर्माण, पालन, संहार कर्म के भेद से ईश्वर को अनेक रूपों में कल्पित कर और फिर प्रत्येक के पृथक–पृथक आकार, व्रत, कथा, तीर्थ, पर्व, पुराण आदि बनाकर परस्पर विरोधी बना दिया गया।

इस स्थिति का समाधान, जचाव महर्षि ने केवल अपनी तर्कणा से ही प्रस्तुत नहीं किया, क्योंकि वेद, उपनिषद आदि में ऐसे अनेक मन्त्र हैं। जिन में यह दर्शाया गया है, कि अग्नि, इन्द्र, विष्णु, वरुण आदि ईश्वर के अनेक नाम हैं। जैसे कि–

इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निमाहुस्थो दिव्यः सुपर्णोः गरुत्मान्।
एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्त्यग्निं यमं मातरिश्वानमाहुः।।

ऋ. 1,164,46

तदेवाग्निस्तदादित्यस्तद्वायुस्तदु चन्द्रमा
तदेव शुक्रं तद् ब्रह्म ता आपः स प्रजापतिः स धाता

यजु. 32,1

अथर्व. 13, 4, 2–5

ऐसे ही भाव मै. उ. 6,8, कै. उ. 5,8, आदि में भी मिलते हैं। इन सभी नामों, शब्दों की यौगिकता से ईश्वर के विशेष–विशेष गुण, कर्म, स्वभावगत अर्थ की अभिव्यक्ति स्पष्ट ही होती है।

महर्षि दयानन्द ने अपने अमरग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश के प्रथम समुल्लास में ऐसी दस पंक्तियाँ दी हैं, जिनसे यह भेदरेखा स्पष्ट रूप में सामने आ जाती है, कि अग्नि, इन्द्रादि शब्द कहाँ ईश्वर के अर्थ में और कहाँ जीव या प्रकृति या भौतिक पदार्थ या भाव वाचक हैं। तभी तो वहाँ लिखा है– 'क्योंकि ओ३म – – –। इससे क्या सिद्ध हुआ कि जहाँ–जहाँ – – –, पृ. 10–11 इस रूप, समाधान को स्वीकार किए बिना वेदों में प्रतिभासित होने वाले विविध देवताओं के वर्णन का और कोई जचाव हाथ नहीं लगता।

जैसे कि हम अपने व्यवहार में देखते हैं, कि जब एक व्यक्ति अनेक तरह के कार्य करता है, तो पाचक, हाली, राज, मजदूर आदि उसके भिन्न–भिन्न नाम कार्य के अनुरूप स्वतः पुकारे जाते हैं। ऐसे ही अपने–अपने सम्बन्ध के भेद से एक ही व्यक्ति को कोई पिता, कोई पुत्र, कोई भाई, पति, चाचा आदि पुकारता है। इसी प्रकार कर्म, गुण आदि के कारण ईश्वर के अनेक कार्मिक गौणिक आदि नाम साहित्य में यथाप्रसंग चर्चित हुए हैं। पर मूल बात को न समझने के कारण कुछ अनेक नामों से अनेक इष्टदेव समझ लिए।

सत्यार्थप्रकाश के एकादश समुल्लास में एक गुरु की सेवा करने वाले दो चेलों के दृष्टान्त द्वारा दिखाया गया है, कि पहले तो कार्य की व्यवस्था, सुनिश्चितता की दिशा में उन्होंने शरीर का दायाँ–बायाँ भाग बाँट लिया और अन्त में उतने मात्र को ही गुरु मान बैठे। एक पैर के दूसरे पर पड़ जाने को मेरे गुरु की अवमानना हुई समझ कर लड़ पड़े। ऐसे ही अपने–अपने प्रिय नाम की स्वतन्त्र सत्ता मानकर अलग–अलग अनेक ईश्वर बना लिए गए।

अनेक देवों के भटकाव में भटकते भक्तों को भटकाव से बचाकर एकता समायोजित करने का प्रथम समुल्लास ही समाधान है। **'वेद की कुञ्जी'** जो जचाव उपस्थित करती है, वही महर्षि दयानन्द ने एक लम्बी शिवसाधना से शिव का मर्म खोजा। दुर्गापूजा, गणपतिपूजन, शिवरात्रिव्रत में बँटते, उलझते भक्तों के लिए यही एकता का सरल सूत्र है। हाँ, जरुरत है, कि कोई सभा या समाज इस **'वेद की कुञ्जी'** रूपी रचना को प्रकाशित कर पाठकों के हाथ में पहुँचाए।

निष्कर्ष– इस समाधान से ये–ये निष्कर्ष सामने आते हैं–

1– सृष्टिकर्ता– धर्ता के रूप में और पूजा के प्रकरण में शिव, दुर्गा, गणपति आदि परमात्मा के ही नाम मान लेने से अनेक देवी–देवता मानने की आवश्यकता नहीं रहती।

2– और न ही तब उन–उन देवी–देवताओं के अलग–अलग त्योहार, व्रत, कथा मनाने की जरुरत होती है।

3– इन तथाकथित देवी– देवताओं की स्वतन्त्र सत्ता स्वीकार न करने से इनमें परस्पर शत्रुता भरे व्यवहार, युद्ध आदि का प्रसंग भी नहीं आता है। फिर इन संघर्षों की सत्ता के हटते ही इसके कारण अनास्था वाली भावना को पनपने का कारण ही नहीं बनता।

4– इन कल्पित देवी–देवताओं की कथा, पूजा, भक्ति, व्रत आदि के करने मात्र से ही सारी सांसारिक इच्छाओं की पूर्ति का भ्रम भी न उपजेगा। तब प्रत्येक 'पुरुषार्थ ही इस दुनिया में सारी कामना पूरी करता है' कि व्यावहारिक स्थिति को अपनाने से सरलता से प्रत्येक व्यक्ति सही ढंग से अपनी इच्छाओं की पूर्ति कर सकेगा।

5– शिवरात्रि आदि पर कथा, व्रत, कीर्तन, पूजन जैसा कर्मकाण्ड ही होता है और उससे संसारी इच्छाओं की पूर्ति समझी जाती है, जबकि जीवन व्यवहार और वैज्ञानिक प्रक्रिया में कहीं भी ऐसा नहीं है। मनुस्मृति में 'आचारःपरमो धर्मः' अर्थात अच्छे आचरण को सब से बड़ा धर्म कहा है। हाँ, कर्मकाण्ड सड़क के बोर्डों की तरह केवल हृदयशुद्धि प्रेरणा के लिए होता है। शिवरात्रि पर प्रेरणा के रूप के स्थान पर आजकल केवल कीर्तन, पूजन आदि ही चलता है और उसी से सारी सिद्धियाँ मानी जाती हैं।

सभी पर्व, त्योहार सामाजिकता, प्रसन्नता प्रेरणा के लिए मनाए जाते हैं। अतः पर्वों का रूप ऐसा ही होना चाहिए, जिससे मनाने वालों को प्रेरणा प्राप्त हो।

182–शालीमार नगर,
होशियारपुर–146001

हिन्दू राष्ट्र या भारत वर्ष

● सुशील कुमार शर्मा

भारतीय सभ्यता संस्कृति विश्व में अत्यन्त प्राचीन है। वैदिक साहित्य भारतीय आध्यात्मिकता तथा संस्कृति का आदि स्रोत है। वैदिक साहित्य में सप्त सिन्धु प्रदेश अर्थात् सात नदियों वाले प्रदेश का वर्णन मिलता है। यह प्रदेश आधुनिक अफगानिस्तान से प्रारम्भ होकर गंगा के पश्चिमी क्षेत्र तक जाता है। सरस्वती, सिन्धु तथा पंजाब की पाँच नदियाँ वितस्ता असिक्नी परूष्णि, विपासा तथा शतुद्रि, इन सात नदियों के कारण इस प्रदेश को सप्त सिन्धु प्रदेश कहा गया है। अनेक इतिहासकार इसी प्रदेश को आर्यों का आदि निवास स्थान मानते हैं। यही प्रदेश विदेशियों के लिए भारत में प्रवेश का मुख्य द्वार रहा है। अत्यन्त प्राचीन राष्ट्र होने के कारण इस देश को समय–समय पर अनेक नामों से पुकारा गया है, जैसे आर्यवर्त्त, आर्यभूमि, भारत, भारत वर्ष, ब्रह्मवर्त्त, भरत खण्डे, हिन्दुस्तान, इण्डिया इत्यादि।

चौथी शताब्दी ईसा पूर्व (326 ई.पू.) यूनानियों ने सिकन्दर के नेतृत्व में भारत पर आक्रमण किया। यूनानियों ने सिन्धु नदी या क्षेत्र को इण्डस कहा जिससे कालांतर में भारत का नाम इण्डिका या इण्डिया पड़ा। आठवीं शताब्दी में अरबों ने सिन्ध पर विजय पाई तथा 11वीं एवं 12वीं शताब्दी में इस्लामी तुर्कों (मदमूद गजनवी, मुहम्मद गोरी) ने भारत पर कईं हमले किए। मध्य युग में इस्लामी आक्रान्ताओं के साथ भारत आने वाले मुस्लिम इतिहासकारों ने अपने वृत्तान्तों में सिन्ध के आधार पर भारत को हिन्द के नाम से पुकारा। उदाहरण स्वरूप अलबेरूनी जो 11वीं शताब्दी में हमलावर सुल्तान मदमूद के साथ भारत आया उसने भारत के विषय में लिखी अपनी पुस्तक "तारीख–उल–हिन्द" में भारत के लिए हिन्द शब्द का प्रयोग किया। इसी से समस्त मुस्लिम शासन के दौरान भारत का नाम हिन्दुस्तान पड़ा।

स्पष्ट है कि भारत को हिन्दुस्तान या इण्डिया नाम विदेशियों द्वारा दिए गए हैं जिनका प्राचीन भारतीय सभ्यता, इतिहास व संस्कृति से कोई सम्बंध नहीं है। वर्तमान में कुछ हिन्दुत्व समर्थक हिन्दू संस्थाओं द्वारा प्रकाशित पुस्तकों में संस्कृत भाषा के शब्द सिन्धुः तथा इन्दुः के आधार पर हिन्दू शब्द की उत्पत्ति की कपोल कल्पना की गई है जो पूर्णतया निराधार और भ्रामक है। इसी के आधार पर भारत को हिन्दू–राष्ट्र बताकर महिमा मंडित किया जा रहा है। संस्कृत भाषा में सिन्धुः तथा इन्दुः शब्दों का अर्थ क्रमशः सागर तथा चन्द्रमा है। इन संस्कृत शब्दों को विकृत करके इनसे 'हिन्दू' शब्द गढ़ने का प्रयास अत्यन्त भ्रामक व दुर्भाग्य पूर्ण है। उसी प्रकार हिमालय शब्द से 'हि' लेकर उसे इन्दुः शब्द के साथ मिलाकर 'हिन्दू' शब्द गढ़ना पूर्णतया गलत व भ्रामक है। हिमालय में दो शब्दों की संधि है, हिम+आलय। हिमालय से केवल 'हि' शब्द क्यों लिया गया पूरा शब्द 'हिम' क्यों नहीं लिया गया? मनमाने ढंग से इस प्रकार संस्कृत भाषा के शब्दों को विकृत करके नए शब्द की उत्पत्ति नहीं की जा सकती। वास्तव में 'हिन्दू' शब्द संस्कृत भाषा का शब्द नहीं है और न ही किसी संस्कृत भाषा के शब्दकोश में इसका उल्लेख मिलता है। यह भी एक अकाट्य प्रामाणिक तथ्य है कि चारों वेदों, छह शास्त्रों, प्राचीन उपनिषदों, रामायण, महाभारत जिसमें श्री मद् भगवद्गीता भी सम्मिलित है तथा सम्पूर्ण बौद्ध ग्रन्थों में एक भी हिन्दु शब्द नहीं है। फिर विदेशियों द्वारा दिए गए किसी विकृत शब्द के आधार पर भारत का 'हिन्दू राष्ट्र' नामकरण करना कहाँ तक न्यायोचित है? संस्कृत एक नियम बद्ध पूर्ण वैज्ञानिक भाषा है। 'संस्कृत' शब्द का अर्थ ही 'शुद्ध' है। सिन्धुः तथा इन्दुः शब्दों को अपने शुद्ध मूल रूप में ही रहना चाहिए, इन्हें विकृत करने का प्रयास निरर्थक तथा अदूरदर्शितापूर्ण है। सिन्धु का आज भी सिन्ध या सिन्धु नाम से ही पुकारा जाता है। हमारे राष्ट्रगान में भी सिन्ध शब्द को लिया गया है।

इस प्राचीन राष्ट्र के नाम तथा भौगोलिक सीमाओं को रेखांकित करते हुए मनु– स्मृति में लिखा है,

सरस्वतीहषद्वत्योर्देवनद्योर्यदन्तरम्
तं देवनिर्मितं देशं ब्रह्मावर्तं प्रचक्षते
2।।17।।मनु.

अर्थात् सरस्वती और हषद्वती इन देवनदियों के मध्य में जो देश है वह देवताओं द्वारा निर्मित है, उसको ब्रह्मावर्त करते हैं। 2।।16।।

आसमुद्रात्त वै पूर्वादासमुद्रात्तु पश्चिमात्।
तयोरेवान्तरं गिर्योरार्यावर्तं विदुर्बुधाः।।
2।।22।।

अर्थात् पूर्व समुद्र से पश्चिम तक और हिमालय से विन्ध्याचल के बीच में जो देश है, उसको विद्वान लोग आर्यावर्त्त कहते हैं। 2।।22।।

वराहमिहिर ने अपनी वृहत्संहिता में लिखा है,

भारतवर्षे मध्यात्प्रागादि विभाजिताः देशाः।
अथ दक्षिणेन लङ्काकालाजिन
सौरिकीर्ण तालीकटाः (14 अ.)

अर्थात् भारत वर्ष में मध्य से पूर्वादि देशों का विभाग है और दक्षिण में लंका, कालाजिन, सौरिकीर्ण तथा तालीकट देश हैं।

महाभारत के आदि पर्व के अध्याय तीन में इस प्राचीन राष्ट्र के नामकरण के विषय में लिखा है,

दुष्यन्तस्तु तदा राजा पुत्रं शाकुन्तलं तदा।
भरतं नामतः कृत्वा यौवराज्येऽभ्यषेचयत्।।
महा. आदि पर्व, अ.3।।112।।

तत्पश्चात् महराज दुष्यन्त ने शकुन्तला कुमार का नाम 'भरत' रखकर उसे युवराज के पद पर अभिषिक्त कर दिया। ।।112।।

स राजा चक्रवर्त्यासीत् सार्वभौमः प्रतापवान्।
ईजे च बहुभिर्यज्ञैर्यथा शक्रो मरूत्पतिः ।।
113।। महा. आदि पर्व. अ. 3।।

महराज भरत सम्पूर्ण भूमण्डल में विख्यात, प्रतापी एवं चक्रवर्ती सम्राट थे। उन्होंने देवराज इन्द्र की भान्ति बहुत से यज्ञों का अनुष्ठान किया ।।113।। महा.

भरताद् भारती कीर्तिर्येनेदं भारतं कुलम्।
अपरे ये च पूर्वे वै भारता इति विश्रुताः।।
114।। महा. आदि पर्व. अ. 3।

भरत से ही इस भूखण्ड का नाम भारत हुआ। उन्हीं से यह कौरव वंश भरत वंश के नाम से प्रसिद्ध हुआ। उनके पश्चात् उस कुल में पहले तथा आज भी जो राजा हो गए हैं, वे भारत (भरत वंशी) कहे जाते हैं।

श्री मद्भगद्गीता के चौथे अध्याय के सातवें श्लोक में श्री कृष्ण कहते हैं,

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ।।
4।।7।। गीता

इस श्लोक में श्री कृष्ण अर्जुन को 'भारत' कह कर सम्बोधित करते है। सार्वकालिक महानतम वैदिक विद्वान महर्षि दयानन्द सरस्वती अपनी पुस्तक सत्यार्थ–प्रकाश में इस प्राचीन राष्ट्र का नाम आर्यावर्त्त तथा भारत ही स्वीकार करते हैं।

इस प्रकार प्राचीन ऐतिहासिक एवं साहित्यिक तथ्यों से यह सिद्ध होता है कि इस राष्ट्र का नाम भारत है और यही नाम सार्थक एवं न्याय संगत है। हमारे राष्ट्रीय गान में भी इसे भारत कहकर पुकारा गया है। समस्त देशभक्त भारतवासी चाहे वे हिन्दू हों, मुस्लिम हों, सिक्ख, ईसाई या बौद्ध हों गर्व से इसे स्वीकार करते हैं। 17वीं शताब्दी में मुगलकाल में छात्रपति शिवाजी ने महाराष्ट्र में एक हिन्दू राज्य की स्थापना की थी क्योंकि उस समय धर्मान्ध मुस्लिम शासक औरंगजेब सम्पूर्ण भारत को एक मुस्लिम राष्ट्र बनाना चाहता था। कालांतर में इस हिन्दू राज्य का वृहत् भारत राष्ट्र में विलय हो गया। हमारा भारत विभिन्न धर्मों, सम्प्रदायों, जातियों एवं संस्कृतियों से मिलकर बना है। सदियों से लोग इसमें मिलजुल कर रहते आए हैं। हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, बौद्ध या पारसी कहलाने में कुछ आपत्ति नहीं है और ऐसा करने की सबको स्वतन्त्रता है। लेकिन एक राष्ट्र के रूप में हम सभी भारतीय हैं और राष्ट्रहित को सर्वप्रथम स्थान दिया जाना चाहिए। भिन्नता होना स्वाभाविक है लेकिन भिन्नता के आधार पर समाज में वैमनस्य की भावना उत्पन्न होना दुर्भाग्यपूर्ण है। लेकिन जब हिन्दुत्ववादी संस्थाएँ इसे एक संकीर्ण हिन्दू–राष्ट्र बनाने की बात करती हैं तो केवल समस्याएँ ही उत्पन्न होती हैं। हिन्दू–राष्ट्र के नाम पर हम समस्त भारतीयों को हिन्दू कहलवाने पर बाध्य नहीं कर सकते। सबको अपनी एक पहचान के साथ भारत में सम्मान के साथ रहने का अधिकार है। भारत एक लोकतान्त्रिक देश है और हम बहुसंख्यकवाद के नाम पर दूसरों पर अपनी बेतुकी निरर्थक धारणाओं को थोप नहीं सकते। अन्यथा हमारा भी वही हश्र होगा जो उन कट्टर मज़हब के नाम पर बने राष्ट्रों का हो रहा है जहाँ केवल बहुसंख्यक समुदाय की प्रत्येक बात को स्वीकार कर लिया जाता है चाहे वे कितनी ही अमानवीय अथवा अनुचित हो। इन हिन्दू संस्थाओं द्वारा प्रायः यह तर्क दिया जाता है कि इस देश में रहने वाले सभी मुस्लिम, सिक्ख, जैन, बौद्ध आदि हिन्दुओं से ही आए हैं, इसलिए मूल रूप में वे सभी हिन्दू हैं। लेकिन प्रश्न यह भी है कि वे हिन्दू कहाँ से आए हैं? हिन्दू कहलवाने से पूर्व उनके अपने पूर्वज स्वयं को क्या कहते थे। जिन महापुरुषों को आज हिन्दू ईश्वर तुल्य पूजते हैं उनमें से किसी भी महापुरुष ने स्वयं को हिन्दू नहीं कहा वे स्वयं को गर्व से आर्य या भारती कहते थे। आज भारत में बहुसंख्यावाद के बल पर तथा हिन्दू समुदाय की एकता के नाम पर समाज में धार्मिक अंधविश्वासों, पाखड़ों तथा झूठे आडम्बरों का ही पोषण प्रसार हो रहा है। सत्य का निर्णय बहुसंख्यावाद से नहीं अपितु तथ्य परक सत्यान्वेषण से होता है।

भारत ऐतिहासिक, आध्यात्मिक तथा सांस्कृतिक दृष्टि से एक अत्यन्त समृद्ध एवं उदार राष्ट्र है। यह मानवीय समानता तथा आपसी सहयोग से ही आगे बढ़ सकता है। लेकिन राष्ट्रहित को ध्यान में रखते हुए किसी भी वर्ग या समुदाय का किसी भी स्तर पर अनावश्यक तुष्टिकरण नहीं होना चाहिए। राष्ट्रहित सर्वोपरि होना चाहिए। राष्ट्रीय एकता को विखंडित अथवा विभाजित करने के कुत्सित प्रयासों के प्रति सदैव सावधान रहने की आवश्यकता है। अन्यथा सदियों के संघर्ष तथा असंख्य बलिदानों के पश्चात् प्राप्त की गई हमारी स्वतंत्रता संकट में पड़ सकती है।

जालन्धर (पंजाब)

हमें बोध कब होगा?

● डॉ. महेश विद्यालंकर

शिवरात्रि सत्यज्ञान आत्मबोध परमात्मज्ञान एवं जड़–चेतन के सत्यबोध का प्रेरक पर्व है। यह तिथि प्रतिवर्ष जागने, संभलने, श्रेष्ठ विचारों व्रतों संकल्पों और जीवनोद्देश्य को बताने एवं दुहराने के लिए आती है। आर्य समाज के इतिहास में और ऋषि भक्तों के लिए इसका विशेष महत्व है। मूलशंकर और आर्यों के लिए यह शिवरात्रि बोधरात्रि बन गई। टंकारा मन्दिर की वह ऐतिहासिक, प्रेरक, नवजागरण, की रात थी। जिसने मूलशंकर को ऋषि दयानन्द बना दिया। शिवरात्रि को वे स्वयं जागे और जीवन भर लोगों को जगाते रहे तथा जीवन–जगत का सत्यबोध कराते रहे। मूलशंकर ने प्रेरक भजन की पक्तियों को व्यावहारिक रूप दिया–

"जो जगत है, वह पावत है, जो सोवत है, वह खोवत है"

शिवरात्रि की रात को मूलशंकर के हृदय में दिव्य–ज्ञान–ज्योति का प्रकाश हुआ। मुझे यहाँ जिस परमेश्वर की पूजा के लिए लाया गया है, वह यह नहीं है। जो शिव के गुण और विशेषताएँ बताई गई थीं वे इनमें नहीं हैं। मूलशंकर ने सत्य–तत्वज्ञान के एक झटके में मिथ्या–अज्ञान व भ्रान्ति को तोड़ दिया। उनके जीवन में यह शिवरात्रि जीवन परिवर्तन का कारण बनी। वे एक रात जागे, फिर कभी जीवन में नहीं सोए। आर्य समाज के लिए यह शिवरात्रि प्रभु का वरदान सिद्ध हुई। यदि मूलशंकर के जीवन में शिवरात्रि न आती, तो मूलशंकर दयानन्द न बनते। यदि दयानन्द न होते तो आर्य समाज न होता। यदि आर्य समाज न होता तो देश, धर्म संस्कृति वेद, यज्ञ, नारी और हमारी सबकी क्या दशा व दिशा होती। इतिहास साक्षी है– छोटी–छोटी बातों, घटनाओं ठोकरों और प्रेरक उपदेशों से जीवन का रंग–ढंग ही बदल जाता है। भोगी, विलासी, दुर्व्यसनी जीवन तपस्वी त्यागी और परोपकारी बन जाते हैं। पतित जीवन से पवित्र जीवन बन गए। कोई नास्तिक से आस्तिक हो गया। एक वाक्य ने कीचड़ में फँसे हीरे को अपनी पहिचान करा दी।

पर्व, जयन्तियाँ उत्सव सम्मेलन और धार्मिक कार्यक्रम हमें जगाने, सँभालने, सुधरने, ऊपर उठने तथा सम्मार्ग पर चलने की प्रेरणा व सन्देश देते हैं। हरसाल शिवरात्रि हमें जगाने आती है। हमारे सब के जीवन में कितनी शिवरात्रियाँ आई और बाहर की धूमधाम तड़क–भड़क व लोकाचार में निकल गईं। कहीं प्रेरणा, चेतना, भावशुद्धि जीवन परिवर्तन आदि नजर नहीं आता। जो सच्चे शिवरूपी परमात्मा से मेल व बोध करा दे, वह तो सच्ची शिवरात्रि है, बाकी सोने की व संसारी रातें है। आज हम इतने भौतिकवादी एवं भोगवादी हो रहे हैं–कहीं रचनात्मक, सुधारात्मक, निर्माणात्मक परिवर्तन नजर नहीं आता है। कहीं बुराई पाप, अधर्म दुर्गुण, दुर्व्यसन आदि से छूटने की ललक बैचेनी तथा वेदना नहीं मिलती। कहीं कोई ऐसा व्यक्ति नहीं मिलता जो संकल्प, व्रत एवं भावना से कहता हो, – मैंने अमुक कथा, प्रवचन, उत्सव, यज्ञ, पर्व आदि से प्रेरणा लेकर झूठ बोलना छोड़ दिया। सुबह शाम परमात्मा का स्मरण व धन्यवाद करना आरम्भ कर दिया है। मैंने व्रत लिया है–सपरिवार समाज–मन्दिर में यज्ञ, भजन प्रवचन के लिए जाया करुँगा। मिशन के लिए त्यागभाव से सेवक बनकर कार्य करुँगा। धार्मिक सभा, संगठनों संख्याओं और समाज मन्दिरों में पदों की दौड़ में नहीं दोडूँगा। आर्यत्वपूर्ण जीवन व्यतीत करुँगा। स्वाध्याय, सत्संग, प्रभु भक्ति सेवा आदि में रुचि व प्रवृति को विकसित करुँगा। जो जीवन व समय बचा है उसे सार्थक एवं उद्देश्य पूर्ण ढंग से जीउँगा। वर्तमान आर्यसमाज की शक्ति, समय, सोच, धन, भाग दौड़ आदि व्यर्थ के विवादों, संघर्षों, उलझनों, झगड़ों व गुटबाजी में जा रही है। आर्य समाज की आन्तरिक स्थिति प्रेरक, सन्तोषजनक, प्रंशसनीय एवं अनुकरणीय नहीं बन पा रही है। सर्वत्र मूल में भूल हो रही है। जो आर्य समाज में होना चाहिए वह हो नहीं रहा है, जो नहीं होना चाहिए वह हो रहा है? बोधोत्सव हमें कह रहा है – उठो! जागो! अपने को संभालो! अपने कर्त्तव्य व लक्ष्य को समझो। यह अमूल्य जीवन बड़ी तेजी से बातों–बातों में निकला जा रहा है। वेद पुकार–पुकार कर कह रहा है–

"यो जागार तम् ऋचाः कामयन्ते"

जो जागता है उसे ही सत्यज्ञान का बोध होता है। जिसे आत्मज्ञान हो गया, वही जीवनोद्देश्य को प्राप्त कर पाता है। अधिकांश लोग अनजाने में आते, जीते और अनजाने में ही संसार से चले जाते हैं। यह शिवरात्रि आत्मबोध का भी पर्व है। मैं कौन हूँ? कहाँ से आया हूँ? किस लिए आया हूँ? हमारा कर्त्तव्य, धर्म एवं लक्ष्य क्या है? कहाँ के लिए चले थे? कहाँ जा रहे हैं? क्या खोया? क्या पाया? अनेक ज्वलन्त प्रश्न हम से उत्तर माँग रहे हैं? हमने संसार परिवार परिचितों आदि के लिए बहुत कुछ किया। जो हमारे साथ जाएगा, वह कितना किया? नहीं तो उपनिषद् कहती है **महती विनष्टि** : यह जीवन की सबसे बड़ी हानि हुई। समय साधनों शक्ति और जीवन के रहते कुछ कर सको, तो करलो, जीवन को सँभाल सको, तो सँभाल लो। हम दुनिया के भोग पदार्थों, चीजों साधन सुविधाओं आदि के बारे में बहुत कुछ जानते हैं, किन्तु आत्मा परमात्मा के बारे में कुछ भी मालूम नहीं है। हमारी अन्दर की दुनिया सोई और खोई पड़ी है। जलसे–जुलूसों, लंगरों, सम्मेलनों आदि की धूम मच रही है। किन्तु हमारी सोच, स्वभाव आदतें व्यवहार तथा जीवन वहीं का वहीं खड़ा है। उम्र का बड़ा हिस्सा निकल गया, फिर भी ज्ञान विचार विवेक वैराग्य आदि के भाव जीवन में नहीं आ पा रहे हैं? संसार और विषय भोगों के पीछे पागलों की तरह दौड़े जा रहे हैं? इच्छाओं, वासनाओं, असन्तोष, तथा अशान्ति की बेचैनी बढ़ती जा रही है। हमें कब बोध होगा? हम कब जागेंगे? कब सभलेंगे? हम अपना बोध दिवस कब मनाएँगे? हमारे जीवनों में सच्ची शिवरात्रि कब आएगी? मूलशंकर के जीवन में बोध दिवस आया, वे ऋषिदयानन्द बन गए। ऋषि से प्रेरणा व शिक्षा लेकर हम सबको अपना बोधोत्सव मनाने की जरुरत है। जब हमारे जीवन जगत् में बोधोत्सव घटित हो जाएगा। तब व्यर्थ की बातें पद, प्रतिष्ठा अहंकार तथा बाहर की भागदौड़ स्वतः रुक जाएगी। जीवन की दशा और दिशा दोनों ही बदल जाएँगे। यह पर्व चिन्तन मनन, कुछ करने, देने, लेने, छोड़ने, संभलने व सुधारने का सन्देश तथा प्रेरणा दे रहा है। आज धर्म, भक्ति तथा परमात्मा के नाम पर ढोंग–पाखण्ड, गुरुड़म, आडम्बर, प्रदर्शन पूजा–पाठ गुरुवाद आदि तेजी से बढ़ रहे हैं। व्यक्तिपूजा और जड़पूजा तेजी से प्रचारित व प्रसारित हो रही हैं। बोधोत्सव कह रहा है– जड़पूजा से चेतन पूजा तेजी से प्रचारित व प्रसारित हो रही है। बोधोत्सव कह रहा है– जड़पूजा से चेतना पूजा की ओर चलो। शरीर के साथ साथ चेतन आत्मा का भी चिन्तन करो। भौतिकता से आधात्मिकता की ओर बढ़ो। सुख से आनन्द की ओर चलो। यही जीवन–जगत् का सारतत्त्व है। इस महापर्व का मौलिक चिन्तन, दृष्टि एवं संदेश है– हम जीवन–जगत, आत्मा–परमात्मा, भक्ति धर्म, धर्मग्रन्थों, महापुरुषों आदि का सत्य बोध प्राप्त कर जीवन को आत्मा परमात्मा से जोड़ें। तभी बोधोत्सव मनाने की उपयोगिता सार्थकता, व्यावहारिकता एवं प्रासंगिकता है। सभी के जीवनों में बोधोत्सव का संदेश घटित हो। ऐसी प्रभु से प्रार्थना और कामना है।

बी. जे. 29 पूर्वी
शालीमार बाग
मो. 9810305288

☞ *पृष्ठ 02 का शेष*

बोध कथाएँ...

नम्र बनो, कठोर नहीं!

एक चीनी सन्त बहुत बूढ़े हो गए। देखा कि अन्तिम समय निकट आ गया है, तो अपने सभी भक्तों और शिष्यों को अपने पास बुलाया। प्रत्येक से बोले– "तनिक मेरे मुँह के अन्दर तो देखो भाई! कितने दाँत शेष हैं?"

प्रत्येक शिष्य ने मुँह के भीतर देखा। प्रत्येक ने कहा– "दाँत तो कई वर्ष से समाप्त हो चुके हैं महाराज! एक भी दाँत नहीं है।"

सन्त ने कहा– "जिह्वा तो विद्यमान है?"

सबने कहा– "जी हाँ।"

सन्त बोले– "यह बात कैसे हुई? जिह्वा तो जन्म–समय भी विद्यमान थी। दाँत उससे बहुत पीछे आये। पीछे आने वाले को पीछे जाना चाहिये था। ये दाँत पहले कैसे चले गये?"

शिष्यों ने कहा– "हम तो इसका कारण समझ नहीं पाते।"

तब सन्त ने धीमी आवाज़ में कहा– "यही बतलाने के लिए मैंने तुम्हें बुलाया है। देखो! यह जिह्वा अब तक विद्यमान है, तो इसलिए कि इसमें कठोरता नहीं और वे दाँत पीछे आकर पहले समाप्त हो गए तो इसलिए कि वे बहुत कठोर थे। उन्होंने अपनी कठोरता पर अभिमान था। वह कठोरता ही उनकी समाप्ति का कारण बनी। इसलिए मेरे बच्चो! यदि देर तक जीना चाहते हो तो नम्र बनो, कठोर न बनो।"

क्रमशः

शिवरात्रि से दयानन्द में परिवर्तन

● डॉ. रवीन्द्र कुमार शास्त्री

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती एक ऐसे महामानव थे। जिनकी तुलना में आजतक सम्पूर्ण विश्व की वसुन्धरा पर न कोई हुआ। भूतो न भविष्यति अर्थात् पूर्व में कभी नहीं हुआ था और न भविष्य में कोई होंगे ऐसी आशा है। जब समस्त संसार पोपो पाखण्डियों एंव धूर्त्तों के चक्कर में पिस रहा था। उस समय समाज में छुआछूत अंधविश्वास, दहेज, प्रथा, जाति प्रथा, बाल विवाह आदि अनेक प्रकार की बुराइयाँ एवं कुरीतियाँ व्याप्त थी। ब्राहमण क्षत्रिय एवं वैश्यादि जाति के लोग छोटे वर्ग के लोगों को हेय दृष्टि से देखते थे। जब शूद्र की माँ बहनें माताएँ आदि कुएँ पर पानी लाने के लिए जाती थी, तो उस समय उच्चवर्ग के लोग उन्हें पानी भरने व लाने नहीं देते थे और कहते थे कि तुम सभी शूद्र हो। शूद्रो को कुएँ पर आने से कुँआ भी अछूत हो जाता है। ऐसी विडम्बना एवं दशा को देखकर स्वामी दयानन्द ने सन 1875ई. में काकड़ बाड़ी नामक स्थान में मुम्बई में आर्य समाज की स्थापना की और संसार के लोगो से कहा कि वेदों के अनुसार कर्मो के आधार पर मनुष्य जाति को चार भागों में बाँटा गया है। जो लोग वेद शास्त्र पढ़ते हैं एवं संध्या हवन करते हैं। वे ब्राह्मण कहलाते हैं, जो लोग असहायों एवं कमजोरों की रक्षा करते हैं वे क्षत्रिय कहलाते हैं, जो लोग भूखों को रोटी एवं प्यासे को पानी पिलाते हैं, वे वैश्य कहलाते हैं तथा जो लोग समाज एवं राष्ट्र की सेवा करते हैं और दूसरों की पीड़ा को अपनी पीड़ा समझकर उनकी सेवा करते हैं, वे शूद्र कहलाते हैं।

स्वामी दयानन्द का जन्म गुजरात प्रान्त के काठिया बाड़ जिले के अर्न्तगत टंकारा ग्राम में सन् 1824ई. में हुआ। जिसका बचपन का नाम मूलशंकर था। कौन जानता था कि आगे चलकर यह मूलशंकर स्वामी दयानन्द के नाम से पूरे विश्व में प्रसिद्ध होगा। उन्होंने बचपन में अपनी बहन की मृत्यु देखी और कुछ दिनों के बाद उन्होंने अपने चाचा की मृत्यु देखी। उनकी मृत्यु को देखकर उन्हें ऐसा झटका लगा कि उन्होंने अपने मन में सोचा कि क्या मनुष्य का जीवन यही है? मनुष्य के जन्म लेने के पश्चात् उसकी मृत्यु निश्चित है। यह सोचकर उनमें वैराग्य की भावना जागृत हो गई।

शिवरात्रि का दिन था। मूलशंकर ने अपनी माँ से कहा, माँ। आज शिवरात्रि है। पिताजी की जगह पर आज शिवव्रत का उपवास मैं रखूँगा। माँ बोली, बेटा मूलशंकर शिवव्रत का उपवास रखना बहुत कठिन है। तुम नहीं रख पाओगे। परन्तु मूलशंकर कहाँ मानने वाला था। उन्होंने शिवव्रत का उपवास रख ही लिया। शिवव्रतोपवास रखने के बाद उनके मन में अनेक प्रकार के विचार उठ रहे थे। वह सोच रहे थे कि बारह बजे रात्रि में मुझे सच्चे शिव का दर्शन होगा। परन्तु ठीक उसके विपरीत हुआ। उसी समय एक चूहा आया और शिवपिण्डी पर चढ़े हुए मोदकों को खाने लगा। यह देखकर मूल शंकर ने अपने मन में सोचा कि यह कैसा शिव है? जो अपनी रक्षा नहीं कर सकता? वह हमारी रक्षा क्या करेगा? यह असली शिव नहीं बल्कि नकली शिव है। उन्होंने शिवव्रत का उपवास तोड़कर भोजन कर लिया। माँ के समझाने पर भी उन्होंने नहीं माना। कुछ दिनो के बाद वह घर से निकलने की तैयारी करने लगा। अंत में वह मूलशंकर अपने सारे परिवार एवं घर को छोड़कर वैरागी हो गए। सच्चे शिव की गवेष्णार्थ कई वर्षों तक अनेक तीर्थ स्थानों पर भटकते रहे। अंत में वह काशी पहुँचे और स्वामी पूर्णानन्द से संन्यास की दीक्षा ले ली। एक दिन स्वामी पूर्णानन्द जी बोले, दयानन्द। तुम जिस उद्देश्य से यहाँ आए हो वह उद्देश्य यहाँ पूरा नहीं होगा यह उद्देश्य मेरे एक मित्र जो प्रज्ञा चक्षु हैं, वेदों, दर्शनो एवं व्याकरण के बड़े विद्वान् हैं। जिन्हें विद्वान् लोग व्याकरण के सूर्य कहते हैं। वहीं पूरा हो सकता है। तदुपरान्त स्वामी दयानन्द मथुरा में स्वामी विरजानन्द के पास पहुँचे। जैसे ही स्वामी दयानन्द सरस्वती ने महर्षि प्रज्ञा चक्षु स्वामी विरजानन्द के कुटिया के द्वार पर पहुँचकर दरवाजा खटखटाया वैसे ही अन्दर से आवाज आती है कि तुम कौन हो? स्वामी दयानन्द बोले, वही जानने के लिए आया हूँ कि मैं कौन हूँ? दयानन्द की आवाज सुनकर समझ गए कि लगता है कि कोई जिज्ञासु छात्र मुझसे पढ़ने के लिए आया है। उस समय स्वामी दयानन्द की आयु छत्तीस वर्ष की थी। स्वामी दयानन्द सरस्वती लगातार तीन वर्षो तक स्वामी विरजानन्द से अध्ययन करते रहे। तीन वर्षो में ही वे व्याकरण, वेदों, दर्शनों के प्रकाण्ड विद्वान् हो गए।

स्वामी विरजानन्द से अध्ययन करने के पश्चात् स्वामी दयानन्द वेदों के प्रचार–प्रसार में लग गए। वेदों के प्रचार–प्रसार करने से पहले स्वामी विरजानन्द बोले बेटा दयानन्द! आज समस्त संसार वेद विहीन होता जा रहा है। लोगों ने वेदों का पढ़ना छोड दिया है। अनेक शिष्यों में तुम ही मुझे एक शिष्य मिले हो, जो तुम मेरे सपनो को साकार कर सकते हो और हुआ भी ऐसा ही। उन्होंने अपने गुरु का आदेश प्राप्त कर अपना सम्पूर्ण जीवन वेदों के प्रचार–प्रसार में लगा दिया और दुनियाँ के लोगों से कहा, ओ संसार के लोगों! तुम सब वेदों की ओर लौटो। तभी मानव जाति का उद्धार हो सकता है। वेद परमात्मा की वाणी है। जो उनकी वाणी को अपने जीवन में उतारता है उसका कल्याण हो जाता है। जो मनुष्य वेदों के अनुसार अपना आचरण करता है उसका रास्ता प्रशस्त होता चला जाता है। जो मनुष्य अपने जीवन में सुख शांति चाहता है उसे तो वेद मार्ग को अपनाना ही पड़ेगा। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज के द्वितीय नियम लिखा है–ईश्वर सच्चिदानंदस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा अनन्त निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।

स्वामी दयानन्द का कथन है कि परमात्मा सत् चित् और आनन्द तीनों है, परन्तु जीवात्मा सत् और चित् है तथा प्रकृति केवल सत् है। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने मनुष्यों को वेदों की ओर लौटने का आह्वान किया था। उनका कथन था कि जो मनुष्य वेदानुकूल आचरण नहीं करता है। उसका कभी कल्याण नहीं हो सकता। जो मनुष्य अपने जीवन में सुखशांति चाहता है। उसके लिए वेद मार्ग ही सबसे उत्तम मार्ग है। जो मनुष्य वेदों के सिद्धान्तों को अपने जीवन में उतारता है उसका जीवन सुख शांति से व्यतीत होता है। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने विश्व के लोगों से कहा था कि परमात्मा निराकार है। उनका कोई आकार नहीं है, परमात्मा का मुख्य नाम ओ3म् है। जैसा कि महर्षि दयानन्द ने कहा था जो मनुष्य श्रद्धा और निष्ठा पूर्वक ईश्वर का ध्यान करता है। परमात्मा उसे मदद करता है और जो इसकी भक्ति से सदा दूर रहता है। उसके जीवन में हमेशा अशांति बनी रहती है। अतः हमे वेदों के सिद्धान्तों को अपने जीवन में अपनाना चाहिए। वेद का संदेश है कि जो मनुष्य जैसा कर्म करता है ईश्वर उसे वैसा ही फल देता है। बुरे कर्मों का परिणाम हमेशा बुरा ही होता है और शुभकर्मों का परिणाम सदा सुखदायी होता है। अतः हमे मनुष्य तन पाकर स्वजीवन में सदा शुभकर्म ही करते रहना चाहिए। किसी कवि ने बड़ा सुन्दर लिखा है –

अगर ऋषिवर की बातों पर जमाना चल गया होता।
तो ये आँधी नहीं उठती किनारा मिल गया होता।।
चमक उठता ज़माने में दुबारा वेद का सूरज।
ज़हालत मिट गई होती अंधेरा टल गया होता।।
कहीं मजलूम ना रोते कहीं निर्दोष ना मरते।
तबाही का जो आलम है वो सारा जल गया होता।।

स्वामी दयाननन्द सरस्वती ने अपने दिव्य ज्ञान से समस्त संसार को एक ऐसा दिव्य प्रकाश दिया। जो युगों तक चमकता रहेगा। स्वामी दयानन्द के जीवन में शिवरात्रि के दिन एक ऐसा मोड़ आया कि उनके सम्पूर्ण जीवन को बदल दिया। वह अंधकार से प्रकाश की ओर आ गए। शिवरात्रि के दिन भारत देश का भाग्योदय हो गया। यदि स्वामी दयानन्द सरस्वती न आते तो आज हिन्दू जाति नहीं बच पाती, आज हिन्दू मुसलमान या ईसाई बनकर इतस्ततः घूमते दिखाई देते। उन्होंने दुनियाँ के लोगों से कहा था कि हम पहले आर्य थे और आज भी आर्य हैं। इस देश का प्राचीन नाम आर्यावर्त था और यहाँ के रहने वालों को आर्य कहते हैं। भगवान श्री राम, योगेश्वर श्री कृष्ण सभी वैदिक धर्म के अनुयायी थे और सभी आर्य थे। जिस प्रकार से स्वामी दयानन्द स्वामी श्रद्धानन्द वीर हकीकत राय आदि धर्मवीरों ने वैदिक धर्म की रक्षार्थ अपने को कुर्बान कर दिया। उसी प्रकार हमें भी अपने वैदिक धर्म की रक्षार्थ तन–मन–धन सर्वस्व न्योछावर करने के लिए हमेशा तैयार रहना चाहिए। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने बाल विवाह को दूर किया। और विधवा विवाह को पुनर्स्थापित किया। छुआछूत, अंधविश्वास समाज में फैली हुई कुरीतियों तथा बुराइयों को दूर किया। ऐसे परोपकारी दयानन्द को हम सभी कभी नहीं भूल सकते। शिवरात्रि के दिन स्वामी दयानन्द के जीवन को बदल दिया। अपने जीवन काल के चौदह वर्ष पहले अंधकार में थे। लेकिन चौदह वर्ष के हुए मूलशंकर शिवरात्रि के दिन जाग उठा और अपने ह्रदय में सोचने लगा कि यह कैसा शिव है? जो शिव एक चूहे से अपनी रक्षा नहीं कर सकता। वह हमारी रक्षा क्या कर सकेगा? शिवरात्रि के दिन ही स्वामी दयानन्द की आँखें खुली और उसी समय उन्होंने निश्चित कर लिया कि मैं सच्चे शिव की खोज करके ही रहूँगा और उन्होंने ऐसा कर दिखाया। स्वामी दयानन्द अपनी मूल अवस्था चौदह वर्ष के शिवरात्रि के दिन के बाद वह मूलशंकर जिनका दयानन्द था। वह तमसो मा ज्योतिर्गमय अर्थात् अंधकार से प्रकाश में आ गए। शिवरात्रि की घटना ने स्वामी दयानन्द के जीवन को बदल दिया। जिस दयानन्द ने वैदिक धर्म की रक्षा के लिए अपने को आहुत कर दिया। ऐसे परोपकारी ऋषिवर दयानन्द को शत् शत् नमन करते हैं।

महर्षि दयानन्द को कभी भुलाया जा नहीं सकता।
सत्यार्थ प्रकाश के पाठकों को भटकाया जा नहीं सकता।
जब तक नभ में सूरज चाँद रहेगा।
तब तक जगत में दयानन्द का नाम रहेगा।।

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ फरीदाबाद, हरियाणा
मो. 8700640736

स्वास्थ्य के लिए घातक जलप्रदूषण

● डॉ. आर्येन्दु द्विवेदी

पर्यावरण एवं हमारा जीवन एक सिक्के के दो पहलू हैं। पर्यावरण में अनेक प्राकृतिक या भौगोलिक वस्तुएँ जल, वायु, आकाश, पृथ्वी तथा अनेक सामाजिक नियम आते हैं जो मानव जीवन को प्रभावित करते हैं। हमारे समाज में प्रमुख रूप से वायु प्रदूषण, जलप्रदूषण, स्थलीय प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, जैव प्रदूषण रेडियो धर्मी प्रदूषण इलेक्ट्रानिक प्रदूषण आदि हमारे समाज में विद्यमान हैं।

1. जिसमें किसी प्रकार का अवाँछनीय पदार्थ न मिला हो तथा स्वास्थ्य के लिए हानिकारक न हो ऐसे प्राकृतिक जल को शुद्ध कहा जाता है। जब जल में नगर, कारखाना आदि का प्रदूषण पदार्थ अधिक मात्रा में मिल जाता है जिससे जल की गुणवत्ता विनष्ट हो जाए तो ऐसे जल को प्रदूषित जल कहा जाता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (W.H.O.) के अनुसार–'जब जल में भौतिक या मानवीय कारणों से कोई बाह्य सामग्री मिल कर जल के स्वाभाविक गुण में परिवर्तन लाती है जिसका कुप्रभाव जीवों के स्वास्थ्य पर प्रकट होता है तो उस जल को प्रदूषित जल कहा जाता है।'
2. जल मनुष्य एवं समस्त जीवधारियों के लिए पेड़ पौधों के लिए नैसर्गिक आवश्यकता है अतः जल ही जीवन है कहा जाता है। जीवन के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण जल है। मानव शरीर का दो तिहाई भाग जल का है। शरीर में जल की कमी मृत्यु का संकट पैदा करती है। मानव को जब स्वच्छ जल नहीं मिलता तो उसके शरीर का प्रत्येक अंग प्रभावित होता है। पेट की बीमारियाँ, फेफड़े का कैंसर, पीलिया, हैजा टाइफाइड, पेट में कीड़े आदि अनेक रोगों से ग्रस्त होता है।

वेदों में हजारों वर्षों पूर्व जल के महत्व का वर्णन देखने को मिलता है। अशुद्ध जल के पीने की बात तो दूर नहाने, धोने के लिए शुद्ध जल होना चाहिए क्योंकि अशुद्ध और गन्दे जल में नहाने या वस्त्रादि धोने से खाज, खुजली, फोड़े–फुंसी आदि चर्म रोग शरीर में हो जाते हैं। अतः स्नान आदि के लिए भी शुद्ध जल का उपयोग होना चाहिए। अथर्ववेद में एक मंत्र आया है–

शुद्धा न आपस्तन्वे क्षरंतु योनः सेदुरप्रिये तं निदघ्मः,
पिवत्रेण पृथिवि मोत्पुनामि।।

अथर्ववेद 12.1.30

अर्थात् हमारे शरीर के लिए शुद्ध स्वच्छ जलों का झरना बहा करे तथा जो कष्टदायक जल आदि वस्तुएँ हैं, वे हमें अच्छी नहीं लगती। अतः उन्हें अपने से दूर रखते हैं। हे पृथिवि माता! हम स्वयं अपने को सब प्रकार से पवित्र बनाएँ ऐसे आपके ये पदार्थ हमें सुलभ रहें।

3. यजुर्वेद में पीने और धोने के लिए स्वच्छ जल का प्रयोग करना चाहिए। इस ओर यह वेदमंत्र ध्यान आकृष्ट करता है।

श्वात्रा:पीता भवत यूयमापो अस्माकमन्तरुदरे सुशेवाः
ता अस्मभ्यमयक्ष्मा अनमीवा अनागसः स्वदन्तु ऋृतावृधः।।

अर्थात् किसी प्रकार हानिकारक रोगाणुओं और अशुद्धतादि दोषों से रहित दिव्य गुणों वाले, जीवन देने वाले सुपरीक्षित शुद्ध जलों को पीकर मनुष्य स्वस्थ, बलवान और सुखी रहें।

4. जल में मृत्यु को दूर करने वाली शक्ति है, औषधि के समान रोगनाशक गुण हैं और भी अनेक दिव्य सुन्दर गुण विद्यमान हैं। इस बात को दर्शाने वाला यह वेदमंत्र आया है।

अप्स्वन्तरमृतमप्सु भेषजमपामुत
प्रशस्तिषु–अश्वाभवत वाणिनः,
देवीरापो यो व आमवाजं सेत्।।

यजुर्वेद 9.6.

5. जल ही जीवन है इसकी शुद्धि नितान्त आवश्यक है तभी हम स्वस्थ्य रह सकते हैं। अथर्ववेद में मंत्र आया है।

इमा आपः प्र भराम्यक्ष्मा यक्ष्मनाशनीः।
गृहानुप प्र सीदाम्यमृतेन सहाग्निना।।

अथर्व 3.12.09

अर्थात् अच्छे प्रकार से रोगरहित तथा रोगनाशक इस जल को मैं लाता हूँ, शुद्ध जलपान से मैं मृत्यु से बचा रहूँगा।

6. किसानों के लिए जल का कितना महत्व है। यह वेद मंत्र स्पष्ट करता है।

तस्मा अरं गमाय वो यस्य क्षयाय जिन्वथ।
आपो जनयथा च नः।

ऋग्वेद 10.9.3.

अर्थात् हे जल तुम अन्न प्राप्ति के लिए उपयोगी हो। तुम पर जीवन तथा नाना प्रकार की औषधियाँ वनस्पतियाँ एवं अन्न आदि पदार्थ निर्भर हैं।

वेदों में इसी प्रकार जल के महत्व के सम्बन्ध में विशद वर्णन प्राप्त होता है।

7. विशेषज्ञों का कहना है कि ऑक्सीजन के बाद जीवन के लिए पानी दूसरा आवश्यक तत्व है। औसतन मानव शरीर में जल की मात्रा 60 से 70 प्रतिशत तक होती है। कुल शरीर वजन का 30% भाग पानी होता है। 'निषेचन के बाद मानवभ्रूण का 80% भाग जल होता है। नवजात शिशु का 75% जल होता है। प्रतिदिन हमारा शरीर 3.5 लीटर जल का विसर्जन करता है।

पाचन और शरीर संचालित करने के अलावा पानी शरीर के तापमान को नियंत्रित कर एक समान बनाए रखने के लिए जरुरी है। यह कोशिकाओं में ऑक्सीजन और पोषण पदार्थों को ले जाता है। पानी शरीर के जोड़ों के लिए कुशन का कार्य करता है। इसमें स्पाइनल कार्ड भी शामिल है। शरीर में पानी की कमी से जल अल्पता जिससे रक्तचाप में बढ़ोतरी, अस्थमा, एलर्जी, सिर का माइग्रेन हो सकता है। इसकी कमी से मूत्र के गाढ़े होने से गुर्दे भी खराब हो सकते हैं।

8. जल का निष्कासन और प्रतिस्थापन जब बराबर होता है तो इसका संतुलन बना रहता है। सामान्य स्थितियों में यह स्वतः ही बना रहता है। पर जब परिस्थिति विशेष में यह असंतुलित हो जाता है जब मुसीबत आ जाती है जैसे अत्यधिक वमन, अतिसार, आंत्रशोध, हैजा, लम्बी मयाद, बुखार, रक्तबहाव आदि। इन स्थितियों में जल व खनिज पदार्थों की विशेष आवश्यकता होती है जो रह–रह कर पिलाते रहना पड़ता है।
9. सामान्य वजन में व्यक्ति में सामान्य जलवायु और सामान्य शारीरिक परिश्रम की परिस्थिति में जल के निष्कासन और प्रतिस्थापन का अनुपात निम्न है–

निष्कासन –
प्रतिस्थापन

मूत्र 1000-1500 ML –
जल व तरल पदार्थ 1100 ML
पसीना 500 ML –
ठोस खाद्य पदार्थ 1000 ML
फेफड़ों से वाष्पन–300-500 ML –
ऑक्सीजन से प्राप्त 300-400 ML
कुल – 1900-2500 ML

यदि शारीरिक जल की मात्रा में 10% (प्रतिशत) कमी हो जाए तो निर्जलीकरण की स्थिति बनती है। विशेषकर बच्चों में यदि 20% (प्रतिशत) की कमी हो जाए तो मृत्यु हो जाती है।

दिन प्रतिदिन प्रदूषण में वृद्धि हो रही है। अमेरिका के राष्ट्रपति ने 1980 में 'विश्व 2000' नामक एक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया था कि–''यदि पर्यावरण प्रदूषण नियन्त्रित नहीं किया गया तो सन् 2030 तक तेजाबी वर्षा, भुखमरी और प्रदूषण का ताण्डव नृत्य होगा और मानवता का भविष्य खतरे में पड़ जाएगा।

10. दक्षिण एशिया के ऊपर फैली प्रदूषण की परत के कारण भारत के ऊपर पड़ने वाली सूरज की रोशनी में 10 फीसदी की कमी आई है, जिससे केवल कृषि को ही नुकसान नहीं हो रहा है बल्कि मानसून प्रक्रिया भी बदल रही है और लाखों का जीवन खतरे में पड़ रहा है।
11. दूषित जल भी स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (W.H.O.) की रिपोर्ट के अनुसार भारत में 80 प्रतिशत बीमारियाँ दूषित जल के कारण टाइफाइड, हैजा, व पेचिश के कारण होती है। भारत में 50 से 60 प्रतिशत लोग जल प्रदूषण से प्रभावित हैं। 'विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार प्रतिवर्ष 5 लाख बच्चे प्रदूषित जल के कारण अकाल मृत्यु का शिकार हो जाते हैं।
12. भारत की पवित्र नदियों में हजारों टन खतरनाक रासायनिक पदार्थ दिन–रात सागर में डाल रहा है। अकेले गंगा क्षेत्र में ही लगभग 4 करोड़ 50 लाख एकड़ मिट्टी का ह्रास प्रतिवर्ष हो रहा है। जिससे भूमि को उर्वर बनाने वाले स्थल और सूक्ष्मतत्व समुद्र में विलीन हो जाते हैं।
13. जल में आवश्यकता से अधिक खनिज पदार्थ, अनावश्यक लवण, कार्बनिक तथा अकार्बनिक पदार्थ डिटरजेक्ट, मल–मूत्र, कूड़ा–करकट आदि नदियों, झीलों में प्रवाहित करने से जल प्रदूषण में निरन्तर वृद्धि होना चिन्ता का विषय है।

केन्द्रीय ग्रामीण मंत्रालय की ओर से ग्रामीण पेयजल के सन्दर्भ में यह जानकारी दुःखद ही है कि देश की 21 लाख से अधिक बस्तियों में शुद्ध पेयजल नहीं है। इस मंत्रालय की रिपोर्ट के अनुसार इन लाखों बस्तियों में लोग जहरीले तत्व युक्त पेयजल का उपयोग करने पर विवश हैं। इस मामले में सर्वाधिक दयनीय स्थिति उत्तर प्रदेश, बिहार, उड़ीसा, असम, राजस्थान में है।

14. विश्व स्वास्थ्य संगठन (W.H.O.) के अनुसार विश्व में प्रतिवर्ष 150 करोड़ बच्चों को अशुद्ध जल से डायरिया हो जाता है, उसमें 40 लाख बच्चे मर जाते हैं।
15. प्रदूषित जल पीने से पेट में कीड़े हो जाते हैं जो मनुष्य के पेट का भोजन खाते हैं जिसके कारण व्यक्ति में रक्त की कमी हो जाती है और व्यक्ति कुपोषण का शिकार हो जाता है। विकासशील देश में लगभग 10 प्रतिशत से अधिक लोग इस समस्या से संक्रमित हैं।

शेष पृष्ठ 08 पर ☞

विशिखानुप्रवेशनीय

● रवीन्द्र पोतदार

वेद का उपदेश है कि जो मनुष्य वैदिक नियमों का अनुपालन करते हैं तथा पथ्यापथ्य का ध्यान कर औषधियों का सेवन करते हैं उन्हें परमात्मकृपा से प्राण और जल आदि पदार्थ तथा सोमलता आदि सब औषधि सुखकारक होती हैं तथा जो दुष्ट प्रमादी, सभ्यों के द्वेषी लोग और जिनसे सभ्य, सरल एवं विद्वान् मनुष्य द्वेष करते हैं तथा जो कुपथ्यादि, विरुद्ध अन्नादि औषधियों को सेवन करते हैं, उनके लिए ये उत्तम पदार्थ भी सदा दुःख देने वाले होते हैं। अतः सभी रोगियों को आयुर्वेदीय पद्धति से निर्मित औषधियों का सेवन पथ्य पूर्वक कर निरोग होना चाहिए, कुपथ्य सेवन से कभी ओषधियों का यथेष्ट लाभ प्राप्त नहीं हो सकता जैसे सामाजिक और आर्थिक अपराधी (विरुद्ध कर्मी) सजा के भागी अवश्य होते हैं।

गुरु के मुख से शास्त्र को पढ़े हुए तथा शास्त्र के अर्थ की उपासना (अभ्यास) करके तथा शास्त्रादि कर्म को गुरु द्वारा करते हुए देख पश्चात स्वयं अभ्यास कर प्रवीणता हासिल कर एवं चिकित्सा तथा शस्त्रकर्मादि करने हेतु राजा अथवा शासन से अनुमति वा प्रमाणपत्र लेकर, नख और बालों को कटाकर, स्नानादि से पवित्र हो स्वच्छ श्वेत वस्त्र पहन छाता धारणकर लाठी हाथ में ले सौम्य वेशभूषा धारण कर, मन के भावों को उच्च रखते हुए मगंलकारी शब्द बोलते हुए, निश्चलवृत्ति से प्राणियों का बंधु बनकर, उत्तम सहायक (भृत्य) के साथ वैद्य विशिखा वा चिकित्साभवन अथवा रोगी के गृह जा ने के मार्ग में प्रवेश करे।

आजकल डाक्टरी व एलोपैथ में इनमें से कितनी योजनाओं का अभ्यास कराया जाता है। यह पाठक स्वयं निर्णय करें? विशेषकर जिस आध्यात्म व आत्मस्थान की बात कही गई है वह मेरे पूर्ण रुप से अनुपलब्ध है, भाग एलोपेथी क्यों, ऐसी शिक्षा तो तथाकथित आयुर्वेदिक विद्यालयों में भी नहीं दी जाती क्योंकि इसे ''धार्मिक'' करार दिया जाता है? मानों अधर्मी और विधर्मी बनाना ही हमारा संविधान है? ध्यान रहे कि ''आयुर्वेद'' स्वयं ऋग्वेद से निकला हुआ उपवेद है, अतः अगर वेद सेक्युलर पंथानी पक्ष की परिभाषा में नहीं आता है तो आयुर्वेद क्योंकर आ सकेगा और तबतो इसका अध्ययन एवं प्रबंध सरकार को नहीं करना चाहिए?

ठीक यही बात उन लोगों एवं संस्थाओं पर भी लागू होगी जो आयुर्वेद का प्रयोग कर तथा इसके सिद्धांतों (उपरोक्त प्रथम पैरावर्णित) की अनदेखी कर धड़ल्ले से कमाई कर रहे हैं? फिर भी ध्यान रहे कि परमात्मा व उसके उपदेशों के वर्णित तथ्यों से , सिद्धान्तों को ताक में रखकर कोई भी व्यक्ति वांछित लाभ नहीं उठा सकता है, यह सरल सिद्धांत एवं निष्कर्ष है।

पुनश्च, इसके पश्चात चिकित्सक, दून, निमित्त, शकुन और मंगल को अनुकुल जानकर रोगी के घर में जा, आसन पर बैठ कर वैद्य रोगी को देखे, शरीर–नाड़ी यकृतप्लीहा आदि का स्पर्श करे तथा रोगोत्पत्ति लक्षण एवं वेदना, निद्रा आना न आना, मल–मूत्र सही होता है या नहीं आदि प्रश्न करे। दर्शन–स्पर्शन व प्रश्न अथवा श्रोत्र, नेत्र, नासिका, जिह्वा और त्वचा तथा प्रश्न से रोगी की परीक्षा करे।

केनेयुक्त रक्त में गति पैदा करने वाला वायु निकलते समय शब्द करता है, स्पर्शनेन्द्रिय से शीत–उष्ण, श्लक्षण, कर्कश, मृदु, कठिन आदि स्पर्श की विशिष्टताएँ ज्वरादिकों में मानी जाती हैं। नेत्रेन्द्रिय (आँखों) के द्वारा शरीर की वृद्धि और ह्रास, आयु के लक्षण, बल,वर्ण और विकार जाने जाते हैं। जिह्वा द्वारा प्रमेहादि रोगों में माधुर्यादि रस विशेषताओं को जानते हैं। नासिका के प्राण–अपान द्वारा व्रण तथा अन्य स्थानों से जो गन्ध आनी है उसका ज्ञान होता है। प्रश्न द्वारा देश, काल, जालिसात्मय रोग की उत्पत्तिकरण वेदना का आधिक्य, बल, जठराग्नि, वात, मूत्र और मल का होना व न होना, रोग कबसे है इत्यादि जाने जाते हैं। वैद्य अगर किसी चक्षुरादि इंद्रियों से रहित हो तो सहायक वा रोगी की बातों अथवा उसके समीपवर्त्ती लोगों से जानकारी ले सकता है।

इन्हीं उपायों से परीक्षापूर्वक करोड़ों वर्षों से वैद्य निदान व चिकित्सा करते आए हैं और कहाँ एलोपैथी का यह विस्तृत इन्द्रजाल, जिसमें फँसने के बाद मनुष्य जीवन भर कष्ट उठाता रहता है। जिस कार्य को एक वैद्य कुछ ही पलों में निर्णय कर देता है व सफलता स्वास्थ्य प्रदान करना है, उसे सम्पूर्ण डाक्टर्स मिलकर कभी भी पूर्ण नहीं कर सकते, अतः वैद्यों को चाहिए कि वे आयुर्वेद का अध्ययन कर इसी विधि द्वारा रोगों का निदान कर चिकित्सा कर अपना और रोगियों का जीवन सफल करें तथा एलोपैथी रुप अमानवीय एंव दुष्ट चिकित्सा पद्धति का नाश करें, किसी तरह की दुविधा में न पड़ें। सरकारें तो जब तक सेक्युलर व नान सेक्युलर से ऊपर नहीं उठेंगी तब तक उन्हें न तो वेद समझ में आ सकता है, न आयुर्वेद पुनश्च–

चंदेसरा 456664

☞ पृष्ठ 07 का शेष

स्वास्थ्य के लिए ...

हैजा, हैपेटाइटिस (पीलिया) आँतों की बीमारियों में वृद्धि प्रदूषित जल के कारण हो रही है।

16. सबसे दुःखद बात है कि सीमित मात्रा में उपलब्ध जल रसायन, धातु, जीवाष्म आदि अन्य प्रदूषण से प्रदूषित होते हैं। पीने का सुरक्षित पानी और मानव विसर्जन की सुरक्षित व्यवस्था जो संक्रमण से सुरक्षित रहती है। आज विश्व के प्रत्येक व्यक्ति का अधिकार है। अस्वच्छ जल आपूर्ति और मानव विसर्जन की समुचित व्यवस्था न होने के कारण कितने वयस्क और बच्चे मौत का शिकार हो रहे हैं। 'नदियाँ इस कदर प्रदूषित हो रही हैं कि मछलियाँ तक मर रही हैं। ठोस औद्योगिक कूड़ा जैसे फ्लाई ऐश, फास्फोडियम, ब्लास्ट फर्नेस, स्टेज तथा विभिन्न तरल रसायानिक कूड़े को किस तरह और कहाँ फेंका जाए एक समस्या बनी हुई है। पेट्रो केमिकल, टाकसिन, ज्वलनशील एवं विस्फोटक रसायन, उद्योगों को नियंत्रित करना एक गम्भीर समस्या है।
17. केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड ने 17 राज्यों में 241 श्रेणी के नगरों में सर्वेक्षण किया जिसके अनुसार 90 प्रतिशत जल प्रदूषित था।

इस जल प्रदूषण को रोकने के लिए सभी सरकारी प्रयास विफल हो चुके हैं और यह समस्या भयावह होती जा रही है। हजारों वर्षों से भारत में तालाबों पर आधारित कृषि एवं पेयजल की व्यवस्था प्रचलित थी। सुखे के समय यह ग्रामीणों की रक्षा करते थे। हम हैंडपम्प और मोटरपम्प पर निर्भर हो गए हैं। आज गाँवों में तालाब समाप्त हो गए हैं। भूमिगत जल का अंधाधुंध दोहन होने से भूमिगत जल का स्तर कम होता जा रहा है।

18. जनसंख्या में वृद्धि, कृषि विस्तार तथा औद्योगिकरण के कारण आज भारत में लगभग 750 घन किली. जल की आवश्यकता है। संयुक्त राष्ट्रसंघ का मानना है कि विश्व के 20 प्रतिशत लोगों को पानी उपलब्ध नहीं है तथा लगभग 50 प्रतिशत लोगों को स्वच्छ पानी भी नसीब नहीं है।
19. जल जीवन का आधार है, इसके बिना जीने की कल्पना नहीं की जा सकती पर स्वच्छ जल आम आदमी हेतु दुर्लभ होता जा रहा है। ''नीरी संस्थान नागपुर'' के अनुसार देश में उपलब्ध जल का 70 प्रतिशत भाग प्रदूषित था। विश्व के करीब 25 हजार लोग प्रतिदिन पानी की कमी या दूषित जल से मरते हैं।
20. भारत में 113 स्वतंत्र नदियाँ एवं हजारों सहायक नदियाँ है परंतु यह अधिकांशतः किसी न किसी भाग में प्रदूषित हो रही हैं। भारत सरकार ने जल प्रदूषण नियंत्रित करने के लिए 120 प्रदूषण नियन्त्रण केन्द्र स्थापित किए हैं। जल गुण प्रबन्ध के लिए सभी 14 मुख्य अन्तर्राज्यीय नदियों के श्रेणीकरण का कार्य पूरा कर लिया गया है। पर्यावरण सम्बन्धी अनुसन्धानों के उन्नवीकरण के लिए 400 अनुसंधान परियोजनाएँ मंजूर की हैं।

जल प्रदूषण निवारक अधिनियम 1974 का प्रावधान किया है जिसके अनुसार प्रदूषण के स्रोत पर ही रोकथाम करना, प्रदूषण फैलाने वालों से ही प्रदूषण की कीमत चुकाने एवं व्यवस्था नियंत्रित करने, अत्यधिक प्रदूषित क्षेत्रों और नदियों के बचाव पर ध्यान केंद्रित करना तथा लोगों को नीति निर्धारण की प्रक्रिया में शामिल करना आदि। परंतु अब तक सरकार के द्वारा जो कदम उठाए गए हैं वे पर्याप्त नहीं है, इसकी ओर सरकार को विशेष ध्यान देना होगा।

जल प्रदूषण रोकने के लिए सीवेज का जल साफ करके नदियों में डालना, कूड़ा करकट, सड़े गले जीव जन्तु तथा मल मूत्र को शहर से बाहर गड्ढा खोदकर गाड़ देना मृत जीवों तथा चिता की राख नदियों में न फेंकना कारखानों के पदार्थ नदी में नहीं डालना आदि व्यवस्था लागू करनी होगी।

पर्यावरण प्रदूषण आज मानव अस्तित्व के लिए जटिल चुनौती है। यदि समय रहते पर्याप्त व्यवस्था न की गयी तो हमें ऑक्सीजन, जल और भोजन के लिए अकाल का सामना करना पड़ेगा। जलप्रदूषण की रोकथाम हेतु प्रत्येक मानव को जागरूक होना होगा। राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रभावकारी कार्यक्रम शुरु करने की आवश्यकता है। पर्यावरण के प्रति जनचेतना जगानी होगी। इसके लिए स्वयंसेवी संगठनों, सामाजिक कार्यकर्त्ताओं सरकारी अधिकारियों, आदि की पर्यावरण प्रदूषण समिति गाँव से लेकर राष्ट्रीय स्तर पर गठित किए जाने की आवश्यकता है। अतः सभी नागरिकों का कर्तव्य है कि इसके निराकरण हेतु अपने दायित्त्व को पूरा करने का संकल्प लें। 'जल ही जीवन है' अतः इसे शुद्ध रखने एवं प्रदूषण से रोकने हेतु प्रत्येक मानव को प्रयास करना होगा। यदि इस ओर ध्यान नहीं दिया गया तो शायद सोचने का मानव को समय हीं नहीं मिलेगा।

एसोसिएट प्राफेसर समाजशास्त्र
राजकीय महाविद्यालय कैम्पियरगंज (गोरखपुर)
9415592187

महर्षि दयानन्द सरस्वती का योगदान

● ओम् प्रकाश यादव

भारत में समाज और धर्म के अनेक सुधारक हुए हैं परन्तु जिस व्यक्ति के सर्वाधिक तिरस्कार तथा अपशब्द मिले हैं वे महर्षि दयानन्द सरस्वती हैं। उन्हें कट्टरपन्थी, हठी, हठधर्मी, जिसने सबमें त्रुटियाँ निकाली हैं, और न जाने क्या–क्या कहा है। बहुत बातों में उनके योगदान को नकारा गया है। एक कार्यक्रम में कुछ गुजराती छात्रों ने एक गाने में गुजराती महापुरुषों की प्रशंसा की। पर इसमें महर्षि दयानन्द सरस्वती का नाम नहीं था। दयानन्द पहले व्यक्ति थे जिन्होंने छुआछूत का विरोध किया और वे पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने हिन्दी को राष्ट्रभाषा *बनाने के विषय में कहा तथा स्वयं हिंदी* सीखकर उसमें कथन तथा लेखन किया परन्तु इनका श्रेय महात्मा गाँधी को दिया जाता है। अन्ततः क्यों?

यह बात नहीं है कि सभी आर्य समाज को न मानने वालो व्यक्ति उनकी आलोचना करते हैं। इसके अपवाद भी हैं। अर्थशास्त्र का एक नियम है कि अपवाद नियम को सिद्ध करते हैं। एक धर्मसभा में, जहाँ मौरवी नरेश, अध्यक्षता कर रहे थे, एक ब्राह्मण ने दयानन्द की आलोचना की और उन्हें अपशब्द भी कहे। मौरवी नरेश ने उसे टोका और कहा कि यद्यपि वे उनके विचारों से सहमत नहीं परन्तु वे उनके राज्य के एक महान् व्यक्ति थे अंतः वे उनकी आलोचना तथा उनके प्रति कहे गए अपशब्द सहन नहीं कर सकते। यह सब जानते हैं कि दयानन्द मौरवी राज्य के टंकारा गाँव में उत्पन्न हुए थे।

महर्षि के योगदान तथा उन्होंने जो कुछ भी किया था उसके कारणों के पूर्व हमें उनके पूर्व भारत के समय और सामाजिक तथा धार्मिक परिस्थितियों के विषय में जानने की आवश्यकता है।

ऋग्वेद के पुरुष सूक्त के मन्त्र 'ब्राह्मणोस्य मुखमासीत्....' तथा मनुस्मृति के "जन्मना जायते शूद्रः....' के अनुसार जिनमें चार वर्ण अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र गुण, कर्म तथा स्वभाव पर आधारित थे। गीता में भी कृष्ण ने कहा है कि मैंने चातुर्वर्ण को गुण, कर्म, तथा स्वभाव के आधार पर बनाया था। कोई भी व्यक्ति अपने गुण, कर्म तथा स्वभाव के आधार पर अपना वर्ण बदल सकता था। किसी भी व्यक्ति की प्रशंसा या बुराई उसके गुण, कर्म, तथा स्वभाव के आधार पर होती थी न कि उसके माता पिता के आधार पर। ब्रह्मर्षि वसिष्ठ एक वैश्या के पुत्र थे परन्तु वे ब्रह्मर्षियों में सर्वश्रेष्ठ माने जाते हैं। उनकी पत्नी अरुन्धती एक शूद्रा थी आज भी वे पतिव्रता नारियों में सर्वश्रेष्ठ मानी जाती हैं। वे सर्वोत्कृष्ट मानी जाती हैं तथा उपासना/आदर के योग्य हैं। विवाह के समय वधू को सप्तर्षियों के साथ अरुन्धती तारा दिखाया जाता है।

ऋषि पाराशर एक चाण्डालिनी के पुत्र थे महर्षि कृष्ण द्वैपायन व्यास एक धाविरी अविवाहिता कन्या के पुत्र थे। आज की भाषा में वे जारज/हरामजादे थे। कौन उनके वेदों को क्रम से लिपिबद्ध करने के योगदान को नकार सकता है। इसी कारण वे वेदव्यास कहलाए। उन्होंने छठे दर्शनशास्त्र 'उत्तरमीमांसा/वेदान्त की रचना की। उनकी कृति 'जय' जो प्रक्षेप/की भरमार के कारण महाभारत कहलाई, जग प्रसिद्ध है।

परन्तु शनैः शनैः यह नियम बदला। वेदकृत वर्णव्यवस्था जातिवाद में बदल गई। ब्राह्मणों ने वेदों तथा अन्य धर्मशास्त्रों के ज्ञान का अनुचित लाभ उठाया। वेद, दर्शनशास्त्र तथा उपनिषदों को एक ओर रख दिया अथवा उनके भ्रष्ट तथा अश्लील अर्थ किए। इन टिकाओं में सर्वप्रसिद्ध सायण का भाष्य है। यदि हम महीधर का भाष्य पढ़ें तो वेदों से अधिक अश्लील कोई और धर्म–शास्त्र नहीं हो सकता (देखिए महर्षि कृत ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका) मनुस्मृति में अपने स्वार्थ तथा विचारों के अनुसार श्लोक जोड़े गए। 1214 श्लोकों की मनुस्मृति में 1817 श्लोक जोड़े गए तथा अब इसमें 2685 श्लोक मिलते हैं। इसी कारण मनु बदनाम हैं। यह सब कैसे ढूँढा गया यह एक अलग विषय है। (देखिए प्रो. सुरेन्द्र कुमार कृत विशुद्ध मनु– स्मृति)। वेदों के स्थान पर पुराण तथा अन्य कपोल कल्पित ग्रन्थ प्रचार में आए। योगीराज कृष्ण को बदनाम करने वाले प्रमुख दो ग्रन्थ वोयदे कृत भागवत पुराण तथा जयदेव–कृत गीतगोविन्द इसके प्रसिद्ध उदाहरण हैं। जिस पुरुष ने एक पुत्र उत्पन्न करने के लिए पत्नी के साथ हिमालय पर ब्रह्मचर्य से 12 वर्ष तपस्या की उसकी गोपियों तथा राधा के साथ रासलीला तथा अवैध सम्बन्धों का विस्तार से वर्णन हैं। अठारह पुराण हैं। इनके लेखक वेदव्यास बताए जाते हैं जिनका इन पुराणों के साथ दूर का भी सम्बन्ध नहीं। कृष्ण के उज्ज्वल चरित्र के विषय में विस्तार से जानने के लिए कृपया बंकिमचन्द्र लिखित 'कृष्ण चरित्र पढ़िए। 13वीं/14वीं शताब्दी से पूर्व कृष्ण के जीवन में कोई राधा नाम की स्त्री नहीं थी। जयदेव ने गीतगोविन्द में उसकी कल्पना की। अब राधा बिना कृष्ण को कोई याद नहीं करता।

समाज में शूद्रों को शिक्षा के अधिकार से वंचित किया। एक नियम यहाँ तक बनाया कि यदि किसी शूद्र के कानों में वेद के पवित्र शब्द पड़े तो उनमें पिघला हुआ सीसा डाल देना चाहिए। अत्याचार की पराकाष्ठा हैं जबकि यजुर्वेद में भगवान कहते हैं कि 'यथेमां वाचं कल्याणीमावदनि जनेभ्यः इस संसारके कल्याण के लिए मैंने वेदरूपी वाणी कही है उसे ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, स्त्री, बच्चे, सेवक तथा दस्यु इत्यादि सबको कहो (सुनाओ)।

संस्कृत में कुछ भी कहो तो वह अशुद्ध तथा भ्रष्ट होने पर भी ब्रह्मवाक्य बन जाता है। इसमें तर्क की कोई गुंजाइश नहीं है। मुझसे बहस करने की हिम्मत करते हो, मुझसे बोलते हो, तुम्हारी इतनी हिम्मत (1) इत्यादि सुनने को मिलता है। यह एक आम बात थी। कोई भी इनको कहे का विरोध करने का साहस नहीं कर सकता था और यदि साहस करता भी था तो उसके कठोर दण्ड भुगतना पड़ता था।

वैदिक काल में उपनयन संस्कार के पश्चात् गुरु के पास ब्रह्मचर्य से शिक्षा प्राप्त करते शिष्य की अभिरुचि, संस्कार तथा ज्ञान के अनुसार प्रायः गुरु ही इसका वर्ण निश्चित् करते थे। ब्राह्मण का पुत्र, शूद्र, तथा शूद्र का पुत्र ब्राह्मण हो सकता था। परन्तु उत्तर वैदिक काल में जन्म से वर्ण निश्चित होने लगे। गुरु द्रोणाचार्य ने भील राजा के पुत्र को अस्त्र–शस्त्र की शिक्षा नहीं दी। परन्तु वह उनकी प्रतिमा बनाकर उनके सामने सतत् अभ्यास कर बाण विद्या में निपुण हो गया तब द्रोणाचार्य ने उसे अर्जुन से श्रेष्ठ देखकर पक्षपात कर गुरु दक्षिणा में उसके दाहिने हाथ का अँगूठा ले लिया।

वेदों के भ्रष्ट अर्थ किए तथा उनमें पशुबलि और नरबलि इत्यादि दुष्कर्म डाले गए जबकि यजुर्वेद में कहा है, 'मा हिंसाः, पशून् पाहि;' हिंसा मत कर, पशुओं का पालन कर। बलि के लिए चतुर्थी विभक्ति लगती हैं, जिसका अर्थ 'के लिए'। इसका अर्थ यह है कि पशुओं इत्यादि के लिए बलि दो अर्थात् परमात्मा की सृष्टि के क्षुद्र प्राणियों के खाने के लिए कुछ दो। कालिदास ने भी मेघदूत में कौओं को गृहबलिभुक् कहा है अर्थात् घर से दिए जाने वाले पदार्थों को खाने वाले। परन्तु इन तथाकथित ब्राह्मणों ने व्याकरण के नियमविरुद्ध बलि के लिए चतुर्थी के स्थान पर षष्ठी विभक्ति लगा दी। पशु–बलि का अर्थ कर दिया– पशुओं की बलि। संस्कृत में एक शब्द के अनेक अर्थ होते हैं। जैसे कि सारङ्ग के 64 अर्थ तथा कनक के आठ अर्थ। सन्दर्भ के अनुसार अर्थ किया जाता है। भोजन के लिए बैठे व्यक्ति के सैन्धव माँगने पर नमक दिया जाता है न कि घोड़ा। आलम्भन का एक अर्थ है वध तथा दूसरा सेवा प्राप्त करना है तो इन जानकारों ने जब महर्षि को यह कहा कि आलम्भन का प्रयोग वेदों में है तब उन्होंने कहा, 'ब्रह्मणे ब्राह्मण मालभेत्' के अनुसार ब्रह्म प्राप्ति के लिए ब्राह्मण का वध करना चाहिए। ब्रह्म को जानने वाला ब्राह्मण हुआ (मनु.)। अतः अर्थ हुआ कि ब्रह्म प्राप्ति के लिए ब्राह्मण सेवाएँ प्राप्त कर। स्पष्ट है जो ब्रह्म को नहीं जानता वह आपको ब्रह्मप्राप्ति का उपाय कैसे बताएगा?

इन सब कुरीतियों के कारण बौद्ध तथा जैन धर्म की उत्पत्ति जहाँ अहिंसा पर आवश्यकता से अधिक बल दिया गया। इसके कारण बाहरी शक्तियों ने देश पर अधिकार करना आरंभ किया तथा अन्त में पूरा भारत परतंत्र हो गया। हमें (अहिंसा परम धर्म है, जहाँ धर्म वहाँ जय) सिखाया गया। हूण, शक तथा कुशन आदि शक्तियों ने देश पर अधिकार कर लिया। अशोक के बौद्ध धर्म अपनाने के कारण मौर्य वंश का नाश हुआ। प्रारंभ में बाहरी शक्तियों के व्यक्ति आर्य बनने लगे। पर बाद में इस्लाम के आगमन के बाद कट्टरपंथिता बढ़ी। हिन्दू अहिन्दू बनने लगे पर अहिन्दू वापस हिन्दू नहीं बन सके। आर्य शब्द का लोप हुआ और उसके स्थान पर हिन्दू धर्म और जाति बने। जातिवाद ने जड़ जमाई। शूद्रों पर अमानुषिक अत्याचार किए गए। परिणाम यह हुआ कि उन्होंने बड़ी संख्या में विधर्म अपनाया। भारत में बहुत थोड़ी संख्या में मुसलमान आए। शेष जो मुसलमान दिखाई देते हैं वे सब यहीं के हिन्दू थे। इसका स्पष्ट परिणाम पाकिस्तान और न जाने क्या–क्या दिखाई देता है।

यह इतिहास में तो नहीं मिलता पर कहा जाता है कि अकबर हिन्दू बनना चाहते थे। पर काशी से व्यवस्था आई कि गधे घोड़े नहीं बन सकते। (हाँ, घोड़े गधे बन सकते हैं) कश्मीर के महाराज पूरे काश्मीर को शुद्ध कर उन्हें हिन्दू बनाना चाहते थे। सब प्रबन्ध कर लिए थे। वे महर्षि दयानन्द को इस कार्य के लिए बुलाना चाहते थे। पर वहाँ के ब्राह्मणों के बल देने पर काशी से व्यवस्था मँगाई जो कि वही थी कि गधे घोड़े नहीं बन सकते। उसका भयङ्कर परिणाम आजकी कश्मीर की समस्या स्पष्ट सबके सामने है। महर्षि के शुद्धि आन्दोलन के बहुत अच्छे परिणाम दिखाई देते हैं। इस विषय पर अलग लेख लिखने का विचार है।

क्रमशः

अध्यक्ष, आर्य समाज, गोवा
विजय कुंज, 165 पी.डी.ए. कॉलोनी
परवरीं–403521–गोवा
मो. 09423885322

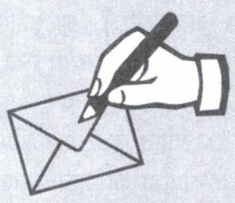

पत्र/कविता

ज्ञानी भुगते ज्ञान से

इस संसार में प्रायः सांसारिक प्राणियों पर दैहिक, दैविक और भौतिक विपत्तियाँ प्रहार करती हैं। व्यक्ति का उस अवस्था में घबरा जाना या विचलित होना स्वाभाविक है। कुछ लोग तो मुसीबत की घड़ी में धैर्य धारण कर लेते हैं किन्तु कुछ इतने घबरा जाते हैं कि प्रभु से मृत्यु के लिए प्रार्थना करते हैं क्योंकि वे अनुभव करते हैं कि हमें न तो घर में सुख है और न बाहर चैन। ऐसे लोगों को मैं सन्देश देना चाहता हूँ–

मुसीबत से घबरा कर कहते हैं,
मर जाऐंगे।
मर कर भी चैन न पाया,
तो किधर जाऐंगे?

इस संदर्भ में हमारे आर्य समाज के मूर्धन्य विद्वान् महात्मा आनन्द स्वामी जी ने बड़ा सुन्दर उपदेश दिया हैः–

देह धरे को कष्ट है, सब काहू को होय,
ज्ञानी भुगते ज्ञान से, मूर्ख भुगते रोय।

संकटकाल को समझदार आदमी प्रभु का आदेश समझ कर स्वीकार कर लेता है। वह मुसीबतों से समझौता यह मान कर लेता है कि यह बुरे कर्मों का फल है और ये मुझे भोगना ही हैं। ऐसा विचार कर लेने पर कष्ट भोगने में कुछ हल्कापन अनुभव होता है। इसलिए हमें मूर्ख नहीं बनना है। आयु ढल जाने पर आदमी अपने को बूढ़ा समझने लगता है, इस प्रसंग में एक शेर अर्ज हैः–

उम्र क्या है, वक्त की बेवजह रवानी है,
उम्र अगर जिन्दादिली है तो बुढ़ापा भी जवानी है।

मुसीबत की घड़ी के सम्बन्ध में अंग्रेजी में भी एक बहुत सुन्दर ध्येय वाक्य (Moto) हैः–

Beautiful pictures are made from
negatives in a dark room.
So if, dark time comes in your life,
be sure, that God is making
beautiful pictures of your
coming life.

विपत्ति के समय आदमी बार–बार भगवान से प्रार्थना करता है–'हे ईश्वर मुझे इस कठिनाई से मुक्ति दिलाओ। जीवन में जब हम खराब दौर से गुजरते हैं तब मन में यह विचार जरूर आता है कि परमात्मा मेरी परेशानी देखता क्यों नहीं? पर याद रखना जब परीक्षा चल रही होती है तब शिक्षक मौन रहता है। जीवन में यदि कठिनाई के दिन आ जाएं या निराशा के दौर से गुजरना पड़े तो उसे ईश्वर प्रदत्त अभिशाप नहीं अपितु वरदान समझकर धैर्य बनाए रखें, इस विश्वास के साथ कि अच्छे दिन जरूर आएंगे। अन्धकार के पश्चात् उजाला अवश्य आता है। हाय तौबा न मचाएँ, प्रभु पर भरोसा रखें। इस सम्बन्ध में रहीम जी ने व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर बहुत सुन्दर बात कही है :–

रहिमन चुप है बैठिए, देख दिनन के फेर,
जब नीके दिन आवहिं है, काजहि बनत न बेरा

विनोद स्वरूप
सुन्दरनगर (हि.प्र.)
मो. 09418154988

****

वैदिक चिन्तन से जुड़ा, है ऋषिवर का नाम

वेदों का उद्धार कर, दिया दिव्य संदेश।
शुद्ध, आचरण शांत मन, जग हो मुक्त क्लेश।। 1।।
पंचयज्ञ में रत रहो, यदि चाहो कल्यान।
यह दैनंदिन कार्य है, ऋषिवर का फरमान।। 2।।
रहो दूर पाखण्ड से, सच्चे शिव को जान।
निराकर तू भज मना, आत्मतत्त्व पहचान।। 3।।
संस्कारित जीवन बनें, कर सोलह संस्कार।
कर्मों से हम द्विज बनें, ऋषिवर की हुंकार।। 4।।
वर्णाश्रम का धर्म जो, पालन करे समाज।
वेद–विहित शुभ कर्म से, उन्नत मस्तक आज।। 5।।
ब्रह्मचर्य–बल से किया, अत्याचार विरोध।
ज्ञान–तपस्या से किया, अनाचार अवरोध।। 6।।
लोभ नहीं कुछ भय नहीं, सिर पर ईश्वर–हाथ।
सिद्धांतों पर रह अटल, दिया धर्म का साथ।। 7।।
शंकर–सम विषपान कर, किया सार्थक नाम।
जगन्नाथ को माफ़ कर, किया दया का काम।। 8।।
नारी–शूद्रों को दिया, सदा मान–सम्मान।
वेद पढ़ें उन्नत बनें, और बनें धीमान।। 9।।
देशभक्ति का वलवला, वेदों पर था मान।
चिन्तन में इक क्रांति थी, सत्य–न्याय–ईमान।। 10।।
हिन्दी–भाषा में रचे, अपने ग्रंथ महान।
राष्ट्र–धर्म सर्वोपरि, इस पर चले जहान।। 11।।
वैदिक चिन्तन से जुड़ा, है ऋषिवर का नाम।
वेद–भाष्य नूतन किये, कीरति ललित ललाम।। 12।।

डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया,
बी–3/79, जनकपुरी, नई दिल्ली–110058
मोः 09718479970

आर्य समाज जीर्ण–शीर्ण क्यों?

एक दिवस प्रार्थी को नई दिल्ली के आर.के.पुरम–4 में आर्य समाज के प्रवेश का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

आर.के.पुरम–4 अति प्रभावशाली शिक्षित एवं साधन सम्पन्न महानुभावों की निवास स्थली है। परन्तु खेद है कि उप. रोक्त आर्य समाज जीर्ण–शीर्ण अवस्था में है ऐसा क्यों?

आपकी पत्रिका के माध्यम से नई दिल्ली के समस्त आर्य बन्धुओं से नम्र आग्रह है कि इस जीर्ण–शीर्ण आर्य समाज को नवीनता प्रदान कर समाज के सदुपयोग हेतु प्रयास करे। तथा स्वामी विरजानन्द और स्वामी दयानन्द जी की आत्मा को शाति प्रदान करें।

विश्वास है कि देहली और नई दे. हली के समस्त आर्य इस पत्र को पढ़कर यथा संभव आर्य समाज आर.के.पुरम–4 को नवीनता प्रदान करने में सहयोग प्रदान करेंगे।

कृष्ण मोहन गोयल
113 बाजार कोट अमरोहा 244221
मो. 9927064104

****

सारे चुनाव एक साथ हों

राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री दोनों ने आग्रह किया है कि लोकसभा और सभी विधानसभाओं के चुनाव एक साथ हों। यदि ऐसा हो जाए तो नरेंद्र मोदी का नाम भारत के इतिहास में जरुर दर्ज हो सकता है। राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री तो आते–जाते रहते हैं। इतिहास के बरामदों में उनके नाम कहाँ गुम हो जाते हैं, किसी को पता नहीं चलता लेकिन ऐसे लोगों के नाम, चाहे वे इन कुर्सियों को भरें या न भरें, इतिहास हमेशा याद रखता है, जो बुनियादी परिवर्तन का विचार या कर्म उपस्थित करते हैं। सभी चुनावों को एक साथ करवाने का प्रस्ताव रखकर मोदी ने यही काम किया है। यदि समस्त विधानसभाओं और लोकसभा के चुनाव एक साथ हों तो देश को कई फायदे हैं। पहला, पांच साल में सिर्फ 15–20 दिन ऐसे होंगे, जब नेता लोग सरकारी कामकाज में ढील देंगे। अभी तो प्रधानमंत्री के साथ–साथ कई मंत्री और मुख्यमंत्रियों का एक ही काम रह गया है कि वे किसी न किसी चुनावी दंगल में लगातार खम ठोकते रहें, जैसे कि गुजरात में अभी–अभी हुआ। इस साल आठ राज्यों में चुनाव हैं। नेता लोग शासन करेंगे या चुनाव लड़ेंगे ? दूसरा, चुनावी दंगल चलते रहने के कारण राजनीतिक कटुता का सिलसिला भी जारी रहता है, जैसे कि उत्तरप्रदेश और गुजरात के चुनावों के दौरान हुआ। इस कटुता की वजह से सामान्य कानून–निर्माण और शासन–संचालन में भी बाधा उपस्थित होती है। तीसरा, जगह–जगह होनेवाले चुनावों के कारण सरकार को बेहद फिजूलखर्ची करनी पड़ती है। सरकारी कर्मचारियों को भी खपाना पड़ता है। 1952 के पहले चुनाव में सिर्फ 10 करोड़ रु. खर्च हुए थे और 2014 के चुनाव में 4500 करोड़ रु. खर्च हुए। यदि सारे चुनाव एक साथ होंगे तो खर्च घटेगा।

डॉ. वेदप्रताप वैदिक

****

महर्षि दयानन्द शिक्षण केन्द्र झज्जर द्वारा 25 कुण्डीय यज्ञ महोत्सव का आयोजन

झज्जर 29.1.18 महर्षि दयानन्द शिक्षण केन्द्र झज्जर के तत्त्वावधान में मौ. भट्टी गेट में 25 कुण्डीय यज्ञ महोत्सव एवं वैदिक भजन–प्रवचन अभिनन्दन समारोह का आयोजन किया गया। मुख्य यजमान श्रीमती अनिल देवी एवं श्री विजय आर्य तथा अन्य यजमान – धर्मवीर खुड्डन, महेन्द्र खातीवास, विरेन्द्र कडोदा, कृष्ण शेरपुर, सुरेन्द्र खेडी खुम्मार, प्रवीण, कर्मवीर, सत्यदेव, भरतसिंह, राजीव, भूपेन्द्र, विष्णु, राजेन्द्र, जयवीर, कर्ण, संदीप, नरेन्द्र, वेदप्रिय, मनीष, चमनलाल आदि सहपत्नी रहे।

डॉ. राजकुमार आचार्य, विरेन्द्र नारा B.E.O., डॉ. एच.एस. यादव, पूर्णसिंह देशवाल, रमेशचन्द्र वैदिक, द्वारका दास, योगाचार्य रमेश कोयलपुर, प्रवेश छिक्कारा, जसवन्त आदि वैदिक विद्वानों ने होनहार छात्रा सुमेधा को तथा श्रीमती कुसुम गर्ग, आशा नागपाल, मंजु सैनी, कमला भारद्वाज रोशनी आर्या, सुनिता, अनिता, पिंकी, सोनिया, रानी, कल्याणी आदि विदुषियों ने होनहार छात्रा शीतल को भाष्य सहित चारो वेद (14 भाग) एवं 18 वैदिक ग्रन्थों के सेटों से सम्मानित किया। योगाचार्य मुकेश आर्य यज्ञ के ब्रह्मा रहें।

विदुषि गायिका श्रीमती कल्याणी देवी जी आर्य ने भजन–प्रवचन के माध्यम से बताया कि परोपकार करने से व्यक्ति सुखी बन जाता है। योगाचार्य मुकेश आर्य ने बताया जिस घर में हो प्यार, हो पितरो (बड़ो) का सत्कार, खुश रहते हो नर–नार, वह घर कितना सुन्दर है।

'शोभायात्रा के गीत' का लोकार्पण

गुरुकुल आश्रम आमसेना (उड़ीसा) की स्वर्णजयन्ती महोत्सव के अवसर पर 'अध्यात्म पथ' के यशस्वी सम्पादक आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री की 'शोभायात्रा के गीत' नामक पुस्तक का लोकार्पण पतंजलि विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य बालकृष्ण जी के कर कमलों से सम्पन्न हुआ।

इस पुस्तक में प्रभातफेरी, शोभायात्रा, ऋषि दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, आर्यसमाज के स्थापना दिवस आदि पावन अवसरों पर गाये जाने वाले प्रेरक एवं आत्मोत्कर्ष परक गीतों का अनूठा संग्रह है। पुस्तक का लोकार्पण करते हुए आचार्य बालकृष्ण जी ने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के महत्व, उस शिक्षा की आवश्यकता और वर्तमान समय में गुरुकुलों के विस्तार पर बल दिया।

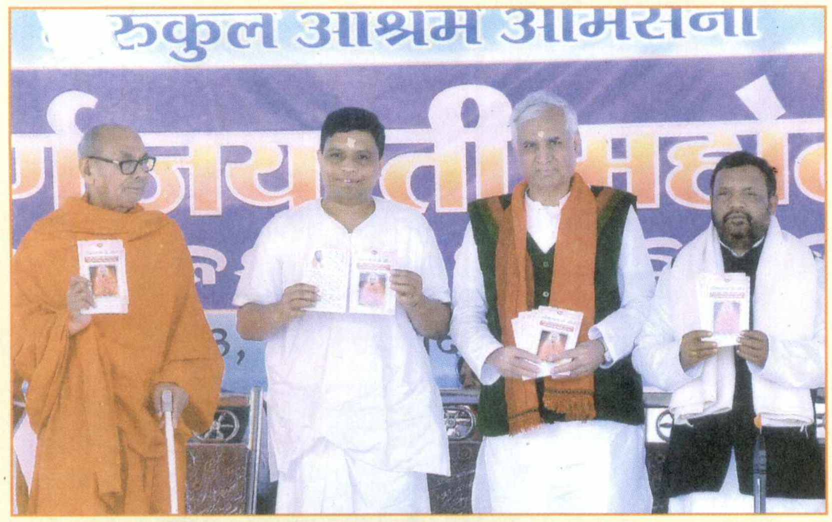

मंचस्थ गणमान्य विद्वानों ने 'शोभा यात्रा के गीत' शीर्षक पुस्तक के संकलन कर्ता एवं सम्पादक आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री को इस उत्तम कृति के लिए बधाई दी। इस शुभावसर पर स्वामी धर्मानन्द सरस्वती, स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, आचार्य विजय पाल, श्री सुदर्शन भगत जी (केन्द्रीय राज्य मन्त्री), ठाकुर विक्रम सिंह (अध्यक्ष–राष्ट्र निर्माण पार्टी), कैप्टन रूद्र सेन सिन्धु जी (प्रधान–गुरुकुल न्यास) आदि गणमान्य लोग मंच पर शोभायमान थे।

विशाल पण्डाल में हजारों की संख्या में प्रबुद्ध श्रोता, मूर्धन्य संन्यासीगण, विद्वतवर्ग, राजनेता, आर्यनेता उपस्थित थे। कार्यक्रम का कुशल संचालन आचार्य वीरेन्द्र कुमार जी ने किया।

आर्य समाज खलासी लाईन में बसंत पंचमी पर हुआ विशेष यज्ञ

आर्य समाज खलासी लाईन में, स्थापना दिवस, बसंत पंचमी, वीर हकीकत राय बलिदान दिवस पर *विशेष यज्ञ हुआ।* मुख्य यजमान डॉ. पूर्णचन्द्र शास्त्री सपत्नी रहे। यज्ञ श्री सुरेन्द्र कुमार चौहान के पुरोहित्य में हुआ। यजमानों को आर्शीवाद वैदिक विद्वानों ने दिया। डॉ. राजवीर सिंह वर्मा जी ने भजनों के माध्यम से कहा–सुबह शाम इस मन मंदिर में झाडू रोज लगाए जा, कोई हँसाए, कोई रुलाए तू अपना फर्ज निभाए जा। तत्पश्चात् वातावरण को भक्तिमय करते हुए वैदिक विदुषी श्रीमति नीलम क्वात्रा जी ने भजनों के माध्यम से कहा–भला करो भगवान सबका भला करो। तत्पश्चात् ध्वजारोहरण का कार्यक्रम हुआ। ध्वजारोहरण जैन डिग्री कॉलेज के भूतपूर्व संस्कृत विभागाध्यक्ष डॉ. पूर्णचन्द्र शास्त्री जी ने किया और छात्र/छात्राओं ने राष्ट्र ध्वज गीत गाया। तत्पश्चात् आर्य शिक्षा निकेतन की छात्र/छात्राओं ने अपना कार्यक्रम किया। तत्पश्चात् वैदिक विद्वान डॉ. पूर्णचन्द्र शास्त्री जी ने अपने प्रवचन में कहा बसंत पंचमी बहुत ही उल्लास व उमंग का वातावरण है। नयापन जो प्रकृति का रूप है नवीनता के सांचे में ढलने लगता है। बसंत पंचमी हमारे आर्य समाज का स्थापना दिवस भी है। चारों तरफ अज्ञान, अविद्या और पाखण्ड का अंधकार छाया हुआ है, आज हम अपने मूल से कट गए हैं। मनुष्य को मनुर्भवः का संदेश सतत् निरन्तर देना आर्य समाज का कर्त्तव्य है। आर्य समाज का स्थापना दिवस हमें अपने कर्त्तव्यों व दायित्वों की याद दिलाता है। वीर हकीकत राय का बलिदान भी आज हुआ था। बच्चों को संस्कारविहीन शिक्षा दी जा रही है बच्चें आज अपने महापुरुषों के नाम भी नहीं जानते। यह हमारा दुर्भाग्य है। सत्य के मार्ग पर चलने से दूसरों का भी कल्याण होगा और हमारा अपना भी कल्याण होगा।

योग-ध्यान साधना शिविर का आयोजन निश्चित हुआ

जम्मू कश्मीर की सुरम्य एवं मनोरम पहाड़ियों में स्थित आनन्दधाम आश्रम (गढ़ी आश्रम) उधमपुर जम्मू कश्मीर मे आश्रम के मुख्य संरक्षक एवं निदेशक पूज्य महात्मा चैतन्यस्वामी जी की अध्यक्षता एवं पूज्य माँ सत्यप्रियायतिजी के सान्निध्य में दिनाँक 8 से 15 अप्रैल 2018 तक निःशुल्क योग–ध्यान–साधना शिविर का आयोजन किया गया है। जिसमें अनुभवी आचार्यों एवं महात्माओं द्वारा उपासना, प्राणायाम, योगासन आदि का क्रियात्मक अभ्यास कराया जाऐगा। इस अवसर पर वैदिक प्रवचन तथा योगदर्शन एवं उपनिषदादि पर भी व्याख्यान होंगे। शिविर में युवा एवं प्रभावशाली वैदिक प्रवक्ता श्री अखिलेश भारतीयजी, स्वामी नित्यानन्दजी आदि अन्य अनेक विद्वान् भी पधार रहे है। इस अवसर पर पूज्य स्वामीजी के ब्रम्हत्व में प्रतिवर्ष की शांन्ति सामवेद पारायण–यज्ञ का आयोजन भी किया गया है। शिविर में साधक अपनी शंकाओं का समाधान भी कर सकेंगे। आश्रम में पूज्य स्वामीजी के सान्निध्य में पहले लगाए गए शिविरों में शिविरार्थियों के बहुत अच्छे अनुभव रहे हैं इसलिए साधकों की संख्या निरन्तर बढ़ती जा रही है अतः इच्छुक साधक अपना स्थान आरक्षित करने के लिए फोन नं. 09419107788, 09419796949 व 094191198451 पर तुरन्त सम्पर्क करें।

Registration No. R.N.I. 39/57
Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11\6066\2018-20
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103 \2018-19
Posted at N.D.P.S.O. ON 7/8-02-2018

मुरलीधर डीएवी सीनियर सेकेंडरी पब्लिक स्कूल अम्बाला शहर में वार्षिकोत्सव का आयोजन

मुरलीधर डीएवी सीनियर सेकेंडरी पब्लिक स्कूल मे आज दिनांक 21–12–2017 को वार्षिकोत्सव के दूसरे चरण मल्हार का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. एम. सी. शर्मा (ट्रैजरर डी.ए.वी.सी. एम.सी., नई दिल्ली) तथा विशष्ट अतिथि डॉ. सुषमा आर्य (रीजनल डायरेक्टर स्कूल्स हरियाणा) रहे।

कार्यक्रम का आरम्भ मुख्य अतिथि तथा विशिष्ट अतिथि ने दीप प्रज्ज्वलित करके किया तथा साथ मे गायत्री मन्त्र का भी उच्चारण किया गया तत्पश्चात सरस्वती वंदना की गई। विद्यालय की आर्केस्ट्रा टीम ने मधुर धुनों के साथ अतिथिगण का अभिनन्दन किया। स्कूल मैनेजर डॉ. विवेक कोहली ने मुख्य अतिथि तथा विशिष्ट अतिथि के स्वागत अभिभाषण मे आभार व्यक्त किया। इस सांस्कृतिक कार्यक्रम मे न सिर्फ मनोरंजक नृत्य प्रस्तुत किये गए अपितु देशभक्ति, भाईचारा, आपसी सहयोग एवं नैतिक मूल्यों का भी सन्देश अपनी प्रस्तुतियों द्वारा दिया।

स्कूल प्राचार्य डॉ. आर आर सूरी ने विद्यालय की वर्षभर की उपलब्धियों का लेखा जोखा दिया। इस अवसर पर गत वर्ष 10 सी जी पी ए अंक प्राप्त कर उत्तीर्ण होने वाले 110 विद्यार्थियो को 5000 रूपय नकद राशि पुरूस्कार स्वरूप प्रदान की गई। कक्षा 12 के 38 विद्यार्थियों को 90 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने पर 2100 रुपय नकद राशि पुरस्कार स्वरूप प्रदान की गई और प्रोफेशनल कॉलेजेस मे दाखिला पाने वाले विद्यार्थियों को भी पुरस्कृत किया गया। विद्यार्थियों को कुल 6 लाख की छात्रवृतियां प्रदान की गई। खेलों मे विशेष उपलब्धि पुरस्कार 13 विद्यार्थियों को दिए गए।

मुख्य अतिथि द्वारा समाचार पत्रिका 'रिफलेक्शन' का भी विमोचन किया गया जिसमे स्कूल के 6 महीनों के कार्यक्रमों तथा क्रियाकलापों का ब्यौरा है।

सोलापुर में एक दिवसीय विश्वविद्यालय स्तरीय हिंदी कार्यशाला संपन्न

सुबह 10.00 बजे इस कार्यशाला का उद्घाटन हुआ। सोलापुर विश्वविद्यालय के प्रथम कुलपति मा. इरेश स्वामी जी उद्घाटक के रूप में उपस्थित थे। उपस्थित अध्यापकों को मार्गदर्शन करते समय उन्होंने कहा कि, "छात्रों पर संस्कार करनेवाला विचार एवं संवेदनाओं को जागृत करनेवाला एवं मानवी मूल्यों को जीवन में ढालनेवाला पाठ्यक्रम बनाना आवश्यक है।" प्रमुख अतिथि के रूप में रूप में उच्च शिक्षा विभाग के सहसंचालक मा. डॉ. सातिश देशपांडे जी उपस्थित थे। उन्होंने अपने मंतव्य में भविष्य में शिक्षा क्षेत्र में आनेवाले बदलावों की चर्चा की। उसी के साथ पाठ्यक्रम छात्र केंद्रित, उनके विचारों को सशक्त करनेवाला एवं नौकरी का अवसर प्रदान करनेवाला हो, ऐसे विचार आपने रखें।

कार्यक्रम के अध्यक्ष स्थान पर महाविद्यालय के प्रधानचार्य डॉ. व्ही. पी. उबाले जी उपस्थित थे। अपने अध्यक्षीय मंतव्य में उन्होंने महाविद्यालय की गतिविधियों को सामने रखते हुए पाठ्यक्रम बनाते समय प्रात्यक्षिक ज्ञान पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता जताई और उपस्थित छात्र एवं अध्यापकों का मार्गदर्शन किया।

इस अवसर पर विविध महाविद्यालयों से पधारे हिंदी अध्ययन मंडल के अध्यक्ष एवं सदस्य, अधिसभा सदस्य, विदया परिषद एवं व्यवस्थापन परिषद के सदस्यों का उचित स्वागत सम्मान किया गया।

प्रा. डॉ. सुरैय्या शेख जी तथा प्रधानाचार्य डॉ. व्ही.पी. उबाले जी ने अपने मंतव्य में सभी आयोजनकर्ताओं का अभिनंदन किया और कार्यशाला की सफलता पर आनंद व्यक्त की। कार्यशाला की सफलता में जिन–जिन अध्यापकों और छात्रों ने तथा ज्ञात–अज्ञात व्यक्तियों ने सहयोग दिया, उन सभी के प्रति हिंदी विभाग प्रमुख प्रा. डॉ जी.डी. बिराजदार जी ने कृतज्ञता ज्ञापित की। इस समारोह का सूत्रसंचालन अध्यापिका ममता बोल्ली ने किया। कार्यशाला की सफलता के लिए विविध समितियों का गठन किया गया था।

आर्य संस्थानों द्वारा अलवर में गणतंत्र दिवस का आयोजन

आर्य कन्या महाविद्यालय, आर्य बा.उ.मा.वि., आर्य प्राथमिक विद्यालय एवं आर्य पब्लिक सीनियर सैकण्डरी स्कूल द्वारा सामूहिक रूप से 69वाँ गणतंत्र दिवस समारोह अत्यन्त हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

वैदिक विद्या मन्दिर, स्वामी दयानन्द मार्ग, अलवर के प्रांगण में दिनाँक 26 जनवरी 2018 को प्रातः 8.30 बजे आर्य कन्या विद्यालय समिति के प्रधान श्री जगदीश प्रसाद गुप्ता द्वारा ध्वजारोहण किया गया और विद्यालयी छात्राओं द्वारा राष्ट्रीय गान प्रस्तुत किया गया। इसके उपरान्त देशभक्तिपूर्ण सांस्कृतिक दयानन्द भवन सभागार में हुआ विद्यालयी छात्राओं द्वारा मुख्य अतिथि एवं अन्य अतिथियों को तिलक लगाकर एवं आर्य कन्या विद्यालय समिति की निदेशक श्रीमती कमला शर्मा ने पीत वस्त्र अर्पित कर स्वागत किया गया। वैदिक परम्परानुसार कार्यक्रम का प्रारम्भ ईश वन्दना से हुआ। उसके उपरान्त छात्र/छात्राओं ने रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम

श्री जगदीश प्रसाद गुप्ता ने शिक्षकों को प्रेरित करने के लिए अपनी माता स्व. श्रीमती गिंदोडी देवी की स्मृति में प्रतिवर्ष 26 जनवरी को संस्था की "सर्वश्रेष्ठ अध्यापिका सम्मान" पर 11000/– रुपये की नकद राशि द्वारा सम्मानित करने की घोषणा की। इसी क्रम में सर्वप्रथम श्रीमती कमला शर्मा को 11000/– रुपये भेंटकर "सर्वश्रेष्ठ अध्यापिका सम्मान" से श्री जगदीश प्रसाद गुप्ता एवं उनकी धर्मपत्नि श्रीमती मोहिनी देवी गुप्ता द्वारा सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर सर्वश्री दिनेश जलूथरिया–जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के पूर्वकालिक सचिव एवं अतिरिक्त मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट अलवर, अशोक कुमार आर्य, इंजि. सुरेश कुमार दरगन, प्रद्युम्न कुमार गर्ग, डॉ. राजेन्द्र कुमार आर्य, वेद प्रकाश शर्मा, श्रीमती मोहिनी देवी, संजू गर्ग, ईश्वर देवी, डॉ. विमलेश शर्मा, शशी बाला भार्गव, नेहा रानी जादौन, आशा शर्मा, स्टाफ, अभिभावक एवं गणमान्य जन उपस्थित रहे।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मंदिर मार्ग के लिए **एस.के शर्मा** द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित **अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.,** डब्ल्यू–30, ओखला, फेस–II, नई दिल्ली–110020 (दूरभाष : 26388830–32) से मुद्रित एवं कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन मंदिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित मो.–9868894601, 23362110, 23360059 सम्पादक – **पूनम सूरी**